हरियाणा विधान सभा

की

कार्यवाही

12 मार्च,1992

खण्ड 1, अंक 4

अधिकृत विवरण

विशय सूची

वीरवार, 12 मार्च, 1992

पृश्ठ संख्या

तारांकित प्र न एवं उत्तर	(4)1
अतारांकित प्र न एवं उत्तर	(4) 21
जनता पार्टी के सदस्यों के निलम्बन सम्बन्धी मामला	(4) 22
सदस्य का नाम लेना/सदस्य का निलम्बन	(4) 24
जनता पार्टी के सदस्यों के निलम्बन सम्बन्धी मामला (पुनराम्भ)	(4) 26
वाक–आउट	(4) 30
ध्यानाकर्शण सूचना–	
पलवल जिला फरीदाबाद के पास एक गांव भारत रत्न डा० भीम राव अम्बेदकर की प्रतिमा तोड़े जाने सम्बन्धी	(4)31
गैर सरकारी संकल्प–	
भौक्षणिक वर्श 1992–93 से राज्य की सभी भौक्षणिक संस्थाओं में पंजाबी को दूसरी भाशा के रूप मैं आरम्भ करने सम्बन्धी	(4)32

हरियाणा विधान सभा

वीरवार, 12 मार्च, 1992

विधान सभा की बैठक, हरियाणा विधान सभा हाल, संस्थान भवन, सैक्टर–1 चण्डीगढ़ में प्रातः 9.30 बजे हूई।

अध्यक्ष (चौधरी ई वर सिंह) ने अध्यक्षता की।

तारंकित प्र न एवं उत्तर

श्री अध्यक्षः आनरेबल मैम्बर्ज, अब सवाल होंगे।

Mr. Spreaker: Hon. Members these questions are deleted as members Sarvshri Jaipal Singh & Ram Kumar Katwal, stand ended from the service of the House

Starred Questions No. 182

Mr. Speaker: This Questions relates to Shri Karan Singh Dalal he is not present in the House.

श्री अमर सिंहः स्पीकर साहब, मानीय सदस्य दलाल साहब किसी कारणव ा में नहीं आ सकें। उन्होंने मुझे यह सवाल पूछने के लिए कहा था। उन्होनें यह कहा था कि मै उने बिहाफ पर यह सवाल पूछ लूं।

Mr. Speaker: Chaudhri Amar Singh Ji, have you been given a letter of authority?

श्री अमर सिहं: स्पीकर साहब, उन्होनें मुझे इस बारे में लिख कर तो दिया नहीं। लेकिन मुझे जुबानी कहा था कि मै उनके बिहाफ पर यह सवाल पूछ लूं रिटन अथोरिटी मेरे पास नहीं है।

Mr. Speaker: I am sorry,then you cannot. Please take your sheet. Next question.

Chaudhri Om Parkash Beri: Will the Minister for Education be pleased to state-

(a) Whether there is any proposal under consideration of the Government to open a Government College for Women in Beri or Village Dighal in District Rohtak; and

(b) if so, the time by which the college as referred to above is likely to be opened?

ि ाक्षा मंत्री (श्रीमती भाान्ति देवी राठी) :

(क) नहीं जी।

(ख) प्र ान ही नहीं उठता।

चौधरी ओम प्रका ा बेरी: स्पीकर साहब, मै आपके माध्यम से ि ाक्षा मंत्री महोदया से जानना चाहता हूं कि कालेज खोलने के लिए क्या क्राइटेरिया है और जिन जगहों पर मैनें कालेज खोलने के लिए मांग की है, क्या वे जगहें उस क्राइटेरिया को पूरा करती है?

श्रीमती भाान्ति देवी राठीः स्पीकर साहब, मैं आपके माध्यम से मानीय सदस्य को बताना चाहूंगी कि एक नया कालेज बनाने के लिए कम से कम 15 एकड़ जमीन होनी चाहिए, बिल्डिंग वगैरह बनाने के लिए कम से कम 200 लाख रूपए की रा ि ा चाहिए और फर्नीचर तथा स्टाफ की तनखाह इत्यादि के लिए कम से कम 10 लाख रूपए चाहिए।

श्री राम पाल सिंह कंवरः अध्यक्ष महोदया, अभी ि ाक्षा मंत्री जी ने बताया है कि नया कालेज बनाने के लिए कम से कम 15 एकड़ जमीन चाहिए, बिल्ड़िग वगैरह बनाने के लिए पैसा चाहिए और स्टाफ इत्यादि की तनखाह देने के लिए पैसा चाहिए। मै आपके माध्यम से मंत्री महोदया से जानना चाहता हूं कि हरियाणा स्टेट के अन्दर जितने पुराने कालेज बने हुए है, क्या उनके पास 15 एकड़ जमीन है यह कहीं पर उनके लिए बिल्डिंग बना कर दी गई है या स्टाफ की तनखाह के लिए किसी ने पहले से जमा करवाय है ? यदि मौजूदा बने हुए कालेजों पर यह कंडी ान लागू नहीं होती तो इन जगहों के लिए यह कंडी ान क्यों लगाई जा रही है?

श्रीमती भाांति देवी राठीः स्पीकर साहब, मै आपके माध्यम से माननीय सदस्य को बताना चाहूंगी कि नया कालेज बनाने के लिए 15 एकड़ जमीन की भार्त है जो पहले के बने हुए कालेज है, हो सकता है उनमें से कुछ कालेज ऐसे हो जिनके पास 15 एकड़ जमीन न हो। जिन कालेजों के पास जमीन कम है

उसके लिए सरकार हमे ाा तत्पर रहती है कि उनके साथ लगते हुए जमीन के टूकड़े को ले लिया जाए या उससे थोड़ी दूरी पर खेल के प्रांगण के लिए जमीन ले ली जाऐ। लेकिन भविश्य में नए बनने वाले कालेज के लिए 15 एकड़ जमीन का होना जरूरी है। जो राजकीय महाविद्यालय है, उनके स्टाफ को सरकार की तरफ से पूरा वेतन दिया जाता है और जो अराजकीय महाविद्यालय है उसको सरकार की तरफ से परसैंट ग्रांट दी जाती है।

श्री अम्र सिंह: स्पीकर साहब, मैं आपके माध्यम से मंत्री महोदया से जानना चाहता हूं कि क्या सरकार ने सब–डिविजन लैवल पर कालेज बनाने के बारे में कोई बात सोची है कि सब–डिवीजन में एक कालेज बनाया जाए। हिसार जिले में जो सिवानी सब–डिवीजन है, वहां पर कालेज के लिए लोग 15 एकड़ जमीन देने के लिए तैयार है, क्या सरकार वहां पर कालेज बनाने के बारे में विचार करेगी? सिवानी सब–डिवीजन रीसैंटली मुख्य मंत्री जी ने हिसार जिले से लिया है, क्या मुख्य मंत्री जी वहां पर कालेज बनाने के बारे में कोि ा ा करेंगें ?

श्रीमती भाांति देवी राठी : स्पीकर साहब, सरकार का ऐसा कोई विचार नहीं है कि सब–डिवीजन लैवल पर कालेज खोले जाएं क्योंकि सरकार के पास इतनी धन रा ि ा उपलब्ध नहीं है।

श्री पीर चन्द : स्पीकर साहब, मंत्री महोदया ने यह जवाब दे कर मेरे सवाल की कीमत कम कर दीं मे आपके माध्यम से मुख्य मंत्री जी से निवेदन करना चाहूंगा कि रतिया भाहर कि आबादी 30 हजार हो गई है और यह बहूत बड़ा भाहर बन चुका है इसलिए वहां पर कालेज होना बहूत ही जरूरी है। क्या सरकार रतिया में भी कालेज बनाने के बारे में विचार करेंगी ? रतिया हल्के में मुख्य मंत्री जी की ससुराल भी है। इस लिए रतिया हल्के के बच्चों को टोहाना के कालेज में पढ़ने के लिए जाना पढ़ता है। कुछ बच्चे पढ़ने के लिए फतेहाबाद में आते है जो वहां से 27 किलोमीटर दूर पड़ता है क्या मुख्य मंत्री महोदय उस इलाके की मांग को ध्यान में रखते हुए कालेज खोलने को प्राथमिकता देंगे ?

श्रीमती भाांति देवी राठी : मैं अपके माध्यम से अपन साथी को बताना चाहूंगी कि मुख्य मंत्री की ससुराल वाली कोई बात नहीं है । इनके लिए तो सारा हरियाणा एक जैसा ही हैै। ये सारे हरियाणा को एक दृश्टि से देखते है। जहां तक रतिया कि बात है उस बारें में आपको बताना चाहूंगी कि अभी वहां ऐसा कोई मामला विचाराधीन नहीं है।

श्रीमती चन्द्रवती : अध्यक्ष माहेदय, मेरा एक सवाल नं० 20 था। जिस समय मैनें लिख कर दिया उस समय स्टार्ड क्वै ाचंज के पैड नहीं थे। विधान सभा स्टाफ वाले कहने लगे कि आप इसी अन–स्टार्ड वाले पैड पर लिख कर दो, स्टार्ड क्वै चन ही ऐडमिट हो जाएगा। अब चूंकि वह अन–स्टार्ड हो गया है

इसलिए मेरी आप से रिक्वैस्ट है कि मेरा यह क्वै चन स्टार्ड होना चाहिए। उसको या ता आप कल लगा ले या सोमवार को लगा दें।

श्री अध्यक्ष : आप मुझे चैम्बर में आ कर मि लें। इस बारें में चैम्बर में डिसाइड कर लेंगे।

श्री अमीर चन्द मक्कड़ : स्पीकर साहब, मै इनकी जानकारी के लिए बताना चाहता हूं कि हांसी में एक कालेज है। उस कालेज के लिए सी० एम० साहब 1987 में डेढ़ करोड़ रूपया मन्जूर किया था। पिछली सरकार ने इस पैसे में अब तक आधा पैसा ही दिया है। इसलिए मेरी एक माँग यह है कि वह बकाया पैसा जल्दी से जल्दी दिया जाये। दूसरा मेरा सवाल यह है कि उस कालेज में एम० एस० सी० और एम० ए० की क्लासिज नहीं लगती। इन क्लासिज के लिए बच्चों को भिवानी या हिसार जाना पड़ता है। मै चाहूंगा कि वहां पर एम० एस० सी० और एम० ए० की क्लासिज भी जल्दी से जल्दी चालू की जाएं।

श्रीमती भाांति देवी राठी: अध्यक्ष महोदय, मैं इनकी जानकारी के लिए बता देती हूं कि योजना के तहत जो पैसा सैक ान है, वह वहां पर अव य लगेगा। जहां तक एम० एस० सी० और एम० ए० की क्लासिज चालू करने की बात है, यह बात भी सरकार के विचाराधीन है।

श्री फूल चन्द मुलाना : मंत्री महोदया ने एक सवाल के जवाब में बताया कि इस साल के बजट में कोई नया कालेज

खोलने का सरकार का विचार नहीं है। मै इन्हें यह कहना चाहता हूं कि यदि हम सरकार को 15 एकड़ जमीन दे दें और क्राइटेरिया के अनुसार दूसरी सुविधाएं प्रदान कर दें तो क्या बराड़ा में कोई नया कालेज खोल दिया जाएगा ?

श्रीमती भाांति देवी राठी : इस पर विचार किया जा सकता है।

श्री राम पाल सिंह कंवर : इनका कहना है कि किसी कालेज को खोलने के लिए 15 एकड़ जमीन का होना जरूरी है। मैं जानना चाहता हूं कि जिन कालेजिज ने 15 एकड़ या इससे ज्यादा जमीन ले रखी है, उस जमीन की जो आमदनी होती है वह सरकारी खजाने में जमा हो जाती है। मेरे हल्के में जानपुरा में जो कालेज है, उसकी जमीन की आमदनी भी सरकारी खजाने में जमा हो जाती है। मै मंत्री महोदया को सुझाव देना चाहता हूं कि ऐसी जमीन से होने वाली आमदनी को उसी कालेज को दे दिया जायें ताकि वह पैसा उस कालेज की बिल्डिंग बनाने या दूसरे कामों पर खर्च हो सके। क्या मंत्री महोदया इस बात पर विचार करेंगी ?

श्रीमती भाांति देवी राठी : स्पीकर साहब, इस प्रकार की अबर कोई बात है तो ये लिख कर दे दें, उस पर हम चिार करेंगे कि इस बारे में हम क्या कर सकते है।

प्रो० राम बिलास भार्मा : स्पीकर साहब, इस साल महिला वर्श मनाया जा रहा है औ यह सवाल महिहलाओं से

संबधित है लेकिन जवाब देते है 'जी नहीं।' मैं इनको बताना चाहता हूं कि इस का जवाब 'जी नहीं' देने की बजाये यह देना चाहिए था कि अभी ऐसा कोई मामला विचाराधीन नहीं है। मैं मंत्री महोदया से पूछना चाहता हूं कि क्या अन्तर्राश्ट्रीय महिला वर्श को ध्यान में रखते हुए कुछ नए महिला महाविद्यालय खोले जाऐंगे ?

श्रीमती भाान्ति देवी राठी : स्पीकर सर, मैं आपके माध्यम से अपने माननीय सदस्य को बताना चाहूंगी कि पिछले दिनों फरीदाबाद में एक महिला कालेज की नींव माननीय मुख्य मंत्री जी ने रखी है। उसके बाद 2 महिला कालेजों की नींव मैंनेरखी है–एक पंचकूला में और दूसरा नारायणगढ़ में। पिछले दिनों माननीय मुख्य मंत्री जी ने एक कालेज के छात्रों और छात्राओं के लिए नई बिल्डिंग करनाल में समर्पित की है। उसमें महिलाओं के लिए एक नया विंग भी बनाया जा रहा है।

मुख्य मंत्री (चौधरी भजन लाल) : स्पीकर सर, मंत्री महोदया जी ने बिल्कुल ठीक जवाब दिया है। ऐसा है कि अभी कुछ डिस्ट्रिक्ट हैडक्वार्टज ऐसे है जहां पर हैड क्वार्टर्ज पर महिला कालेज बनाएं फिर सब–डिविजनल लेबल पर बनाएं और फिर इन्टीरियर ऐरियाज में जहां हाई स्कूल काफी है, वहां बनाएंगे, इसी तरह से हम थ्री फेजिज में महिला कालेज बनाएगें।

श्री अध्यक्ष : क्या मुख्य मंत्री जी यह बताएंगे कि वे महिलाओं के लिए प्राईवेट कालजे खोलने की इजाजत देंगें?

चौधरी भजन लाल : अध्यख महोदय, प्राईवेट कालेज चाहे लड़कों का हो चाहे लड़कियों का हो, जो भी आदमी खोलेगा उसके लिए जो भी क्राईटेरिया फिक्स होगा, उस के मुताबिक ग्रान्ट हम जरूर देंगे और सब को देंगे।

श्रीमती चन्द्रावती : स्पीकर साहब, मैं माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहती हूं कि जो भी विद्यालय इस समय है या आगे खोलेंगे, उनके साथ छात्रावास खोलने के बारे में क्या ये विचार करेंगो ?

श्रीमती भाान्ति देवी राठी : अध्यक्ष महोदया मैं आपके माध्यम से अपनी माननीय सदस्य महोदया को बताना चाहती हूं कि छात्रावास का हमने बहूत से कालेजों में प्रबन्ध किया हुआ है और भविश्य में भी हम इस पर विचार करते रहेंगे।

चौधरी ओम प्रका ा बेरी : अध्यक्ष महोदय मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री महोदया से यह जानना चाहता हूं कि हमारा इलाका ि ाक्षा के मामले में काफी उपक्षेति रहा है, इसका क्या कारण है ? ि ाक्षा के बारे सरकार का दायित्व बनता है कि सभी इलाकों के लोगों को समान रूप से ि ाक्षा दी जाए। जो इलाका इन भार्तों को पूरा न करता हो, क्या वहां पर रिलैक्से ान दे कर क्राइटेरिया के अनुसार सरकार कालेज खोले जाने के बारे में विचार करेगी ?

श्रीमती भाान्ति देवी राठीः स्पीकर सर, आपके माध्यम से मैं माननीय सदस्य को बताना चाहती हूं कि इनका इलाका पिछड़ा हुआ नहीं है। इस बारे में मैं इन्हे थोडत्री डिटेल देना चाहूंगी क्योंकि इन्होनें यह कह दिय ''उपेक्षित रहा है''। तो मैं रोहतक जिले का ही थोड़ा सा विवरण बता देना चाहूंगी। रोहतक जिलें में सात राजकीय महाविद्यालय 11 अराजकीय महाविद्याालय और एक वि ववविद्यालय है बेरी में दुवलधन की ढाणी 4 किलोमीटर है और वहां एक कालेज है, बेरी से दूजाना 5 किलोमीहटर है और बेरी से रोहतक केवल 20 किलोमीटर पड़ता है वहां पर लड़कियों का भी कालेज है। बेरी से झज्जर करीब 15 किलोमीटर केअन्तर पर है और वहां पर भी कालेज है। फिर हम कैसे मानें कि रोहतक जिला या बेरी का इलाका ि ाक्षा के मामले में उपेक्षित रहा है?

श्री कर्ण सिहं दलाल : स्पीकर साहब मैं आपके माध्यम से मंत्री महोदया से यह जानना चाहता हूं कि कई ओ० टी० और जे० बी० टी० सैंटर खुले हुए है कई जिलों में तो ज्यादा हैं और कई जिलों में बहूत कम है।

श्री सुरजीत कुमार धीमान : अध्यक्ष महोदय, मै। आपके द्वारा सरकार से यह जानना चाहूंगा कि जो बिल्डिगें स्कूलों केलिए किराये पर ली हूई है और जो आधी गिरी पड़ी हैं .....। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : यह प्र न स्कूलों से कन्सर्न्ड नहीं है। केवल विमेन कालेजों से कन्सर्न्ड है। आप फिर किसी ऐप्रोप्रियेट समय पर यह सवाल पूछें, अभी आप बैठिए।

श्री कर्ण सिंह दलाल : अध्यक्ष महोदय, मैं, कुछ लेट हो गया था इसलिए मेरा सवाल नं. 182 रह गया है। कल भी ऐसा हुआ था कि एक सदस्य का प्र न रह गया था लेकिन जब वे बाद में आए तो उनका सवाल लग गया था। वह सवाल श्री राम विलास भार्मा का था। इसलिए मेरी प्रार्थना है कि इस सवाल के बाद मुझे अपना सवाल पूछने की इजाजत दे दी जाए।

श्री अध्यक्ष : अगर टाईम से पहले सारे क्वै चन टेक अप हो गए तो फिर आपको मैका देंगे। अभी आप बैठिए।

प्रो० छतर सिंह चौहान : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से मंत्री महोदया का ध्यान इस और दिलाना चाहता हूं कि भिवानी जिले में केवल एक कालेज है और वहां विमैन कालेज की नितान्त आव यका है। क्या मंत्री महोदया यह बताने की कृपा करेंगी कि वहां कालेज कब तक खोला जाएगा? वे भिवानी को कम से कम ि ाक्षा के क्षेत्र में दण्ड न दें, वहां कोई कालेज खोलने की व्यवस्था करें।

श्री भाांति देवी राठी : अध्यक्ष माहेदय ये भिवानी जिले की बात करते है। प्रोफेसर साहब आपका तो राज काफी दिन रहा है। सोनीपत जैसे जिलें में जहां कालेज हैं ही नहीं और उसके

साथ जिन अन्य जिलों में भी गवर्नमैंट कालेज नहीं है, वहां पहले कालेज खुलेंगे। जैसे मुख्यमंत्री जी ने बताया कि हम सबसे पहले जिलों में कालेज खोलने पर विचार करेंगे, उसे बाद सब–डिवीजन में और उसके बाद सब–डिवीजन में और उसके बाद खण्ड आदि में कालेज खोलने की बात सोच सकते है। भिवानी ि ाक्षा के क्षेत्र में पिछड़ा हुआ नहीं है।

Dhamana Minor

***135 Shri Amar Singh:** Will the Minister for Irrigation and Power be pleased to state-

(a) Whether it is a fact that water of Dhamana Minor is not flowing beyond village Gunjar in Hisar District due to which no water reacher at the tail of villages in Bawani Khera constituency; and

(b) If so, the reasons thereof?

सिचांई तथा बिजली मंत्री (श्री भाम ोर सिंह सुरजेवाला) :

(क) नहीं श्रीमान् जी।

(ख) प्र न ही नहीं उठता।

श्री अमर सिंह : स्पीकर साहब, में आपके माध्यम से आई. पी.त्र एम. साहब बहादुर के नोटिस में यह लाना चाहूंगा कि

पिछले चार साल के राज में पानी का हएक कतरा धमाना माईनर टेल पर नहीं गया लेकिन यह सरकार आने के बाद पानी एक बार टेल पर गया है और उसके बाद नहीं गया है। क्या मंत्री माहेदय इसकी जानकारी देंगे ? हन्होनें तो बहूत ब्यूटीफूटी कह दिया – ' No Sir, question does not arise' . स्पीकर साहब मै। मंत्री माहेदय की जानकारी के लिए बताना चाहता हूं कि अब भी टैंक खाली पड़ा हुआ है और वहां पीने के पानी की व्यवस्था भी नहीं है। डिप्टी कमि ानर साहब ने डिस्ट्रिक्ट ग्रीवैसंसिज कमेटी में यह बात मानी थी। इसी तरह नलवा वाटर वर्कस का पता लगांए क्योंकि एक फुट से ज्यादा पानी नहीं होता। अगर एक फुट जानी जब वाटर टैंक में हो तो सात गांवों नलवा, बालावास, कंवारी, धमाना, गुंजार, भोजराज और दायमा को पानी नहीं मिल सकता। इसका कारण यही है कि टेल पर पानी नहीं जाता है और टेल एंड पर ही वाटर वर्कस है जिकी वजह से यह खाली पड़ा रहता है।

श्री भाम ोर सिंह सुरजेवाला : अध्यक्ष महोदय, मैं साहब बहादुर नहीं हूं। वे तो अंग्रेजों के पिट्ठू होते थे, मैं तो उनके खिलाफ था और आज भी हूं। (हंसी) साहब बहादूर किसी और को कहना। मै। अध्यक्ष महोदय, यह कह रहा था कि इन माननी सदस्य ने यह कहा है कि इस सरकार के आने के बाद वहां पानी कभी नहीं गया है ऐसी बात नहीं है। अध्यक्ष महोदय बात सिर्फ इतनी है और वे ध्यान में रखेंगे कि यह जो 91–92 का साल

है, यह ड्राई ईयर है और यमुना में कभी इतना कम पानी नहीं हुआ। इस महीने की 10 तारीख को केवल 1400 क्यूसिक पानी हरियाणा के हिस्से मे आया जबकि पिछले साल 6600 क्यूसिक पानी था। उसके मुकाबले मे आज केवल 1400 क्यूसिक है। इसलिए अब इस मुि कल साल में हमने चार ग्रुप्स बनाए हैं जो यमुना से फीड किए जा रहे है। महीने में आठ–आठ दिन उनको पानी दिया लेकिन जब बीच में इनफलो घट गया तो पानी की कमी हुई और जब पीछे बरसात हुई तो हमने निरन्तर नहरें चलाई। मैं इनको एक बात कहना चाहूंगा कि इनकी जो अथेराईजड स्पलाई है और आर०डी० 86,815 सुन्दर डिस्ट्रीब्यूटरी है, जहां से धमाना माईनर निकलता है, उसमें एक पैक्यूलियर दिक्कत हैं जिसमें अमर सिंह जो अपनी भी महकमें की भी और किसानों की भी मदद करेंगे। अध्यक्ष महोदय डयूरिंग 4/91 से 2/92 तक 460 केस अनअथोराईजड इरिगें ान के वहां दर्ज हुए है जो कि अपने में एक रिकार्ड है। वे पाईप भी लगाते है और पानी को रास्ते में भी रोक लेते हैं पिछले चार साल जो सरकार रही है, उसने किसानों को एनकरेज किया और जो उसके खास लोग थे उनको कहा कि तुम चारी से, जबरदस्ती से और धक्के से पानी चलाओ। इस सरकार ने आने के बाद पुलिस की गस्त बढ़ाई। नाईट वाच के लिए पुलिस अफसरों की ड्यूटी लगाई, इस तरह काफी इम्प्रूवमैंट हमने की है। स्पीकर साहब, इससे अगले सवाल में इसके बारे में पूरी फिगर बताऊंगा कि हमने कितना–कितना पानी डिस्चार्ज किया है। केवल एक छोटे से

पीरियड को छोड़कर बाकी पीरियड में अथोराईजड सवप्लाई भिवानी जिलें को मिली है।

श्री अमर सिंह : अध्यक्ष महोदय, मै। आपके माध्यम से मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं कि हमारे यहां दो ग्रुप है। एक सुन्दर ग्रुप में 666 क्यूसिक पानी का प्रावधान है, जबकि आज हमें सुन्दर ग्रुप से 1700 क्यूसिक पानी के मुकाबले केवल 1100–1200 क्यूसिक पानी ही मिला। क्या मंत्री जी बताएंगे कि पिछले 6 महीपे में सुन्दर ग्रुप से और अन्टा ग्रुप से कितना कितना पानी मिला? सुन्दर ग्रुप से पानी कम होने के कारण इस 26 किलोमीटर लम्बी टेल पर कभी पानी नहीं पहुंचा इसके बारे में मंत्री महोदय ने कोई जवाब नहीं दिया है, इसके अलावा भोजराज में इसके बारे में मंत्री महोदय ने कोई जवाब नहीं दिया है, इसके अलावा भोजराज में पानी न मिलने को कारण भी मंत्री जी ने नहीं बताया है, इसलिए मै। जानना चाहूंगाा कि धमाना माईनर की टेल पर गूंजार से भोजराज तक, कब कब पानी गया?

श्री भाम ोर सिंह सुरजेवाला : अध्यक्ष महोदय, 1991–92 में इनकी टेल 0.54 फीट रही जो फुल टेल नहीं है, यह फुल न रहने के दो कारण है। एक ड्राई इयर और दूसरा लो फलो इन यमुना रिवर and this is an area where farmwr causes major theft of water. On account of this, about 500 cases had to be registered within a very short period. अध्यक्ष महोदय दूसरे ये पूछ रहें है कि धमाना माईनर की टेल पर गुंजार से भोजराज

तक कब कब और कितना कितना पानी गया? इसके बारें में इन्हें बताना चाहता अगर यह चाहें तो नोट कर सकतें हैं। अंटा ग्रुप से भिवानी जिने को पानी मिलता हैं एक भिवानी सब ब्रांच और एक हैड दादी फीडर है। ये दो सोर्स है, बाकी रजवाहे यहां से निकलते है। अध्यक्ष महोदय, 4–11–90 से 11–11–90 तक भिवानी सब ब्रांच में 4720 क्यूसिक पानी रहा। इनका अथोराईजड डिसचार्ज 4190 क्यूसिक होना चाहिए था जो कि इनको मिलता रहा। दादरी फीडर सें 2808 क्यूसिक के मुकाबल 2807 क्यूसिक पानी दिया यानि पूरा पानी मिला। उसके बाद 6–12–90 से 13–12–90 तक भिवानी जिले को 4720 क्यूसिक अथोराईजड पानी मिलाना था लेकिन 4453 क्यूसिक पानी ही मिला। यह करीब तीन सौ या पौने तीन सैर क्यूसिक कम है। इसके अलावा दादरी में 2808 क्यूसिक के मुकाबले 2856 क्यूसिक अथोराइज्ड पानी मिला यानी ज्यादा पानी मिला। उसके बाद 7–1–91 से 14–1–91 तक भिवानी जिलें में 4720 क्यूसिक के मुकाबलें में 3934 क्यूसिक पानी मिला और दादरी में 2808 क्यूस्कि पानी मुकाबले 2531 क्यूसिक पानी मिला। इस तरह से 8–2–91 से 15–2–91 तक भिवानी सब–ब्रांच मेंसे 4720 क्यूसिक के मुकाबले 4714 क्यूसिक पानी मिला यानी पूरा पानी मिला और दादरी फीडर में से 2808 क्यूसिक के मुकाबले 2937 क्यूसिक पानी मिला यानि पानी अधिक मिला।

श्री अमर सिंह : स्पीकर साहब मंत्री जी सुन्दर ग्रप के बारे में बतायें।

श्री भाम ोर सिंह सुरजेवाला : अध्यक्ष महोदय यह दूसरे सवाल के जबाब में है और उस सवाल का जवाब मैने देदिया है। (विघ्न) आपको टेल के बारे में बता दिया है तथा उसके रीजंज भी बता दिये है। यह मैंने 0.54 फीट बताई है और उसके फुल न होने के दो कारण बताये है। Major reasons is short inflow in Yamuna, lowest inflow ever recorded in Yamunas this year. इसके अलावा जो चोरी के 460 केस रजिस्टर किए गए है आप उनको भी पकड़वाने में हमारी मदद करो।

श्री अमर सिंह : आप यह बतायें कि जो टेल पर पानी गया है, उससे मेरे तीनों गांवों में पानी क्यों नहीं गया है ? (ाोर) ।

(इस प्र ान का कोई उत्तर नहीं दिया गया)।

श्री राम भजन अग्रवाल : स्पीकर साहब, मैं आपके माध्यम से मंत्री महोदय कोयह बताना चाहता हूं कि मेरा हल्का तो टेल पर पड़ता है। उसके अन्दर टेल ही टेल है। वहां पर का त करने के पानी की तो बात ही दूर है पीने के लिए पानी नहीं मिलता है। अीाी मंत्री जी ने यह बताया है कि भिवानी फीडर में 2808 के मुकाबले में 2937 पानी दियचा है जबकि असल में बहुत कम पानी मिला है। भिवानी के बारे में इन्होनें क्या खास हिदायत दे रखी है कि भिवानी फीडर के अन्दर पानी कम दिया जाए ताकि वहां के लोग पीने के पानी के लिए भी तरसें और पानी से महरूम

रह जायें ? पिछले दिनों मुख्य मंत्री महोदय ने यह वि वास दिलाया था कि सारी टेल्ज पर पानी पहुंचाया जाएगा जबकि आज भी पानी वहां पर पहुंच नहीं रहा है।

श्री भाम ोर सिंह सुरजेवाल : स्पीकर साहब, मैं राम भजन जी से कहना चाहूंगा कि इन्होंने मेरी बात को ध्यान से सुना ही नहीं है। मैं कह राह था कि भिवानी को जो दोनो सोर्स है, हैड फीडर, दादरी से चैनल्ज निकलती है, उसमें दो बार को छोड़कर ज्यादा पानी मिला है। मैं फिर इनको बता दूं कि 2808 क्यूसिक पानी के मुकाबलें एक बार 2707 क्यूसिक पानी मिला हैं। कितना कम मिला है यह आप खुद देख लें। दूसरी बार 2808 की बजाए 2937 क्यूसिक मिला और अगली बार 2808 क्यूसिक की बजाए 2856 क्यूसिक मिला है। इसके बाद एक बार फिर कम मिला है, 2808 क्यूसिक की बजाये 2531 क्यूसिक मिला है। यह सब इसके बावजूद है कि ज्यादा ड्राई ईयर पैटर्न है। यमुना कैंचमैंट में थ्रू–आउट बरसात नहीं हुई और बरसात का पानी नहीं आया। हमारे पास इसके अलावा पानी का दूसरा कोई सोर्स नहीं है। यमुना कैचमैंट में थ्रू आउट बरसात नहीं हुई और बरसात का पानी नहीं आया। हमारे पास इसके अलावा पानी का दूसरा सोर्स नहीं है। इन दिनों में हमने पानी डाइवर्ट करेन इनको दिया है। मैं इनसे यह कहूंगा कि पानी की दिक्कत को देखते हुए अपने इलाके के किसानों को यह समझायें कि आपस में एक दूसरें का पानी न लें, पानी की चोरी नहीं होनी चाहिए और जब कभी हमारे

अधिकारी इनको इनवाईट करें तो नहर के अधिकारियों की मदद भी करें।

Inadequate Supply of Water

***146. Prof chhattar Singh Chauhan:** Will the Minister for Irrigation & Power be pleased to state-

(a) Whether it is a fact that Dadri Feeder was not given its due share of water during its rotational programme for the last four months ; and

(b) if so, the reasons thereof ?

Irrigation and Power Minister (Sh. Samsher Singh Surjewala) :

(a) Dadri Feeder was given due share of water during the last four months except in January, 1992.

(b) Less water was available in Dadri Feeder due to less availability of water in Yamuna River.

प्रो० छतर सिंह चौहान : अध्यक्ष महोदय मैं आपके माध्यम से मंत्री

महोदय का ध्यान एक बात की और दिलाना चाहता हूं कि दादरी फीडर पैप्सू के टाईम की बनी हुई है और उस समय इस फीडर के टेल तक कोई मोघा नहीं होता था और न ही कोई ऐसा प्रोवीजन था। लेकिन पैप्सू के बाद पंजाब और हरियाणा

अलग होने के बाद पिछले काफी समय से यहां पर मोघे लगाये गये । मै। मंत्री महोदय से यह प्रार्थना करूंगाा कि वह हैड फीडर को देखकर यह बतायें कि दादरी फीडर की टेल पर कितना पानी पहूंचा है। क्योंकि भोयर तो पीछे ही रह जाता है। दूसरी बात यह है कि दादरी फीडर में पानी बहुत कम आता है। मै। और चौधरी अमर सिंह जी कई बार मंत्री महोदय से भी और मुख्य मंत्री महोदय से भी मिले है। आज सदन के पटल पर तो हमें कह रहें है कि सिवाय दो बार को छोड़ कर पूरा पानी मिला है, जबकि हकीकत उल्अ है। जब भी हम इनसे मिले है, हर बार इन्होने हमारे सामने यह माना है कि पानी कम है, इसलिए पानी टेल पर नहीं पहूचता है। मै। यह नहीं समझ पाया कि आज जो फिगर्ज इन्होनें दी है, यह कैसे दी है ? मै यह बात दावे के साथ कहना चाहता हूं कि जुलाई 1991 के बाद से लेकर आज तक दादरी फीडर पर चा दादरी डिस्टब्यूटरी पर या अंटा ग्रुप या सुन्दर ग्रुप से पूरा पानी कभी नहीं दिया गया। इसका क्या कारण है?

श्री भामे ोर सिंह सुरजेवाला : अध्यक्ष महोदय यह बात ठीक नहीं है कि माननीय सदस्य कभी मुझे मिले हों और चौधरी अमर सिंह इनके साथ हों और हमने यह कहा हो कि पानी नहीं या इसलिए नहीं पहूंचता ऐसी कोई बात नहीं है। जब कभी ये मिल या कोई और हमसे इस बारें में मिला, हमने अधिकारियों से पूछकर बताया है और पूरा पानी देने की कोि ा ा की है। हमने हमे ाा यह कह है कि यह जो साउदर्न हरियाणा के इलाके है खास तौर पर सिरसा, हिसार, भिवानी, भिवानी, महेन्द्रगढ़,

नारनौल और रिवाड़ी, इन में पानी की दिक्कत है। यहां पर फील्डज के लिए भी पानी की दिक्कत है। मवे ि ायों के लिए हमने हमे ाा पानी दिया है। यहां वाटर सप्लाई इन्हीं नहरों के ऊपर बेसड है क्योंकि ट्यूबवैल नहीं है। इन्हीं नहरों से किसान को भी फसल के लिये पानी देने को हमने भरसक कोि ा ा की है। ऐसी बात नहीं है कि पानी न मिला हो। स्पीकर साहब, अगर इनको किसी बात का भाक है तो हमें बताएं । फिर भी मैं इनकी जानकारी के लिये बता देता हूं कि ये जो फिग्र्ज है ये न मेरी तैयार की हूई है। मै यह बताऊंगा कि यह फिग्र्ज वेरीफाई कैसे हूई है। Joint discharge observation carried out on 9.12.91 by the Executive Engineer (Construction), Executive Engineer, Rohtak, S.D.O., Dadri and S.D.O., Gujrani of D.I.C. indicated that the deliveries at RD 107 tp tje Njowamo Orrogatopm Corc;e were neomg sjpwm 42 cusecs less than the discharge being delivered. यह फिग्ग्र्ज कोई हमारी या किसी एक अफसर की नहीं है। पूरे अधिकारियों के योगदान से बनी है। एक्चुयल जो इसका सिस्टम है, वह यह कि यह डबल्यू. जे.सी. वैस्टर्न रोतक जो है, वह भिवनी इरीगे ान सर्कल की आर०डी० 107, भिवानी सब ब्रांच का और उससे पहले अन्टा ग्रुप से पानी उनको पहूंचता है। उनकी आगे सप्लाई की डिस्ट्रीब्यू ान है। दादरी डिस्ट्रीब्यू ान जो है वह भिवानी इरीगे ान सर्कल में है। वहां आबे पानी पहुचाने के लिये आगे की नहरें चलाई जाती है। अनैक्सचर ''ए'' जो मैंने आज चौधरी अमर सिंह जी के सवाल के जबाब में पढ़ा है उसमें बिल्कुल जाहिर किया गया है कि नवम्बर–दिसम्बर 1991 से लेकर

जनवरी–फरवरी 1992 तक कितना कितना पानी गया है। मै। इतना कह सकता हूं कि दादी फीडर में सिवाये एक टर्न के पानी फालतू गया है। और ये कह रहेंकि पानी टेल तक नहीं पहुचंता। उन्होनें यह भी कहा कि पैप्सू में तो मोघे देते नहीं थे और अब सीधे मोघे नहर से से ही दे दिये। अध्यक्ष महोदय, मैनें इदस नहर का पूरी तरह से इंस्पैक ान किया ह। पिछली टैन्योर में मैनें पूरी तरह से उपर से नीचे तक इंस्पैक ान किया था। उनकी प्रोब्लम और है। एक तो किसान वाटर कोर्सिज नही बनाता दूसरी बात यह है कि इनकी दिक्कत इसलिये भी है कि थोड़ा बहुत सैन्डी एरिया है वाटर कोर्सिज की गैर हाजिरी में ये मोघा चाहते हैं जोकि पासीबल नहीं है। होता क्या है कि जिन किसानों का खेत नहर के पास होता है, वह तो नजदी होने के कारण मोघे से पानी लेता है और आगे वाले किसान के खेत तक पानी नहीं पहूंचता। इनकी समस्या को दूर करने के लिये सरकार काडा द्वारा अपने क्रार्यक्रमों द्वारा और दूसरी एजैन्सियों जैसे एम० आई० टी० सी० द्वारा पक्के वाटर कोर्सिज रजवाहे बनाने का प्रयत्न कर रही है। इस तरह के बहुत सिस्टम हम कर क्रिएट भी कर चुके है। इसलिये मै। यह कहना चाहूंगा कि ऐसी दिक्कत वाली बात नहीं है। सरकार की तरफ से पानी देने के लिये पूरे प्रयत्न किये जा रहे है।

श्रीमती चन्द्रावतीः अध्यक्ष महोदय, क्या मंत्री महोदय बताएंगें कि दादरी फीडर से सोरा डिस्ट्रीब्यूटरी की टेल तक कभी पानी पहूंचा है ? दूसरा, दादरी के पास राबलटी वगैरह एक दो

जगहों पर जो पानी वापिस होता है उसके लिये सरकार नरे क्या इन्तजाम किया है ?

श्री भामसेर सिंह सुरजेवाला : अध्यक्ष महोदय, यह बहन चन्द्रावती जी ही बताएंगी कि छोटे रजवाहे व माईनर्ज में पानी है कि नहीं ? यह सवाल तो पूछा नहीं गया था। अगर रजवाहे का सवाल अलग से पूछेंगी तो मै। कल बता सकता हूं। अगर पानी नहीं गया तो यह नोटिस भिजवांए उनको पूरी जानकारी दी जाएगी और जो भी किसान की मदद होगी, हम करेंगे।

श्रीमती चन्द्रावती : वहां पानी पहूंचाने कि कोि ा ा करनी चाहिए।

श्री भाम ोर सिंह सुरजेवाला : जरूर करेंगें।

श्री अमर सिंह : स्पीकर साहब मंत्री जी ने बताया कि यमुना रीवर में पानी कम ह। हम भी मानते है कि कम है लेकिन जब तक यमुना में पानी पूरा नहीं होता तब तक आधे हरियाणा के जिलों को भाखड़ा का 21 दिना पानी मिलता है और आधे जिलों में सात दिन मिलता है। मै यह जानना चाहता हूं कि क्या भाखड़ा से लेकर डब्लयू० जे०सी० वालो को मिले ?

श्री भाम ोर सिंह सुरजेवाला : स्पीकर साहब, इस साल 21 दिन तक पानी किसी को नहीं मिला। भाखड़ा के इलाकों में अपना एरिया भी पड़ता हे। हमारे यहां भी मोस्ट आफ दि पीरियड 8–8 दिन से फालतू पानी नहीं मिला है। जहां तक इनके एरिया कि बात है हमारे पास 1400 क्यूसिक पानी है उससे ग्रुप बना कर पानी चलाते है।

तारांकित प्र ान संख्या 170

यह प्र ान नहीं गया क्योंकि माननीय सदस्य, श्री मोहन लाल पिपल, इस समय सदन में उपस्थित नहीं थे।

Production of Fish Seed

***192 . Chaudhry Azmat Khan :** Will the Minister of State for Fisheries be pleased to state-

(a) the names of the Fish Seed Producing Farms in the State;

(b) the total quantity os seed produced in the aforesaid farms ands supplied to fish-farmers during the period from 1st April, 1991 to date ; and

(c) whether there is any proposal under consideration of the Government to produce fish seed in the tank of Kalanger in District Gurgaon.?

वक्फ राज्य मंत्री : चौधरी भाकरूल्ला खां

(क) राज्य में निम्नलिखित फार्मों पर मत्सय बीज पैदा किया जा रहा है।

1.	बि ानगढ़
2.	सैदपुरा (करनाल)

3.	ज्योतिसर (कुरूक्षेत्र)
4.	रोहट (सोनीपत)
5.	ककरोई (सोनीपत)
6.	छमदमा (गुडगांव)
7.	टोहाना (हिसार)
8.	ओटू (सिरसा)
9.	संपला (रोहतक)
10.	झज्जर (रोहतक)
11.	सेहना (गुड़गांवा)
12.	बदखल (फरीदाबाद)

(ख) 1 अप्रैल, 1991 से अब तक इन उपरोक्त फार्मों में 92.67 लाख मत्स्य बीज पैदा करके मत्सय पालको को वितरित किया गया।

(ग) हां, कलन्जर फार्म पूरा होने पर इसमें मत्सय बीज पैदा किया जाऐगा।

चौधरी अजमत खां : मैं मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि कलैजर सीड फार्म पर काम कब भ्रारू हुआ था और कब तक पूरा हो जाएगा तथा अब तक इस पर कितनी लागत आ चुकी है।

चौधरी भ्रुकरूल्ला खां : स्पीकर साहब तीन साल पहले इस पर काम भ्रारू हुआ था इसके लिए साढ़े दस लाख रूपये का ठेका पंचायती राज को दिया गया था। यह काम जून तक पूरा हो जाएगा।

श्री राम पाल सिंह तंवर : स्पीकर साहब, करनाल जिलें में सैदपुरा में फि ा सीड तैयार किया जाता है। मैं जानना चाहता हूं कि पिछले साल और उससे पिछले साल में वहां पर कोई सीड पैदा किया गया या नहीं ? अगर पैदा किया गया तो उसको बन्द क्यों किया गया।

चौधरी भाकरूल्ला खां : अध्यक्ष महोदय, वर्श 1988–89 में दस लाख 695, 1989–90 में 10 लाख 162, 1990–91 में 11 लाख और 1991–92 मैं 10 लाख फि ा सीड पैदा किया जाएगा।

श्रीमती चन्द्रावती : स्पीकर साहब, क्या मंत्री जी बताएंगे कि नो–प्राफिट नो–लोस बेसिज पर चल रहें है या इनमें लाभ होता है ? दूसरा सवाल मेरा यह है कि यह बीज किस–किस को दिया जाता है?

चौधरी भारूल्ला खां : अध्यक्ष महोदय, हमें इससे लाभ हो रहा है। मैं बहन जी को बताना चाहूंगा कि लाभ का ध्यान में

रखें बगैर कोई काम नहीं हो सकता। मछली खाने में बहूत अच्दी होती है और उसको बेचने से भी काफी पैसा मिलता है।

श्रीमती चन्द्रावती : स्पीकर साहब, मेरे सवाल का जबाब नहीं आया। में चाहूंगी कि मंत्री जी मेरे सवाल का सही जबाब दें।

चौधरी भाकरूल्ला खां : अध्यक्ष महोदय, बहन जी जितनी मछली के लिए कहेंगी वह हम भिजवा देंगे। जितनी मछली बहन जी खा सकती है उतनी हम इनको भिजवा देंगे। (हंसी)

चौधरी अजमत खां : स्पीकर सहब, कनीना में आज 8 साल पहले मछली पालने के लिए पानी के टैंक बनाए गए थे लेकिन वे सार टैंक बेकारन पड़े है। मैं मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि यदि उन टैंकों में मछली पालन का काम नहीं करना है तो वहां पर स्टाफ क्यों लगाया हुआ है ? मंत्री जी मेरे पड़ोसी गांव के रहने वाले है, उन्हें पता है कि उन टैंकों से फारमर्ज को बहुत तकलीफ हो रही है। उन टैंको में मछली पालन का काम कब तक भाुरू कर देंगे ? इसके अलावा, मै। यह भी जानना चाहूंगा कि इन 12 सीड फार्म्ज पर किस भाव पर बीज सप्लाई करते है और उससे अक तक सरकार को कितना पैसा आया है ? क्या सरकार को नफा हुआ है या नुकसान हुआ है ?

चौधरी भाकरूल्ला खां : स्पीकर साहब, माननीस सदस्य ने मेन सवाल (क), (ख) और (ग) तीन पार्ट में पूछा था। मैनें उनका जवाब दे दिया है और यदि ये सारे इस बारे में और ज्यादा

जानना चाहते है तो ये मेरे आफिस में आ जाएं, सारी डिटेल बता दूंगा। (हंसी)

श्री हरी सिंह नलवा : स्पीकर साहब, मै आपके द्वारा मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं कि हरियाणा में मछलियों का जो सीड पैदा किया जाता है वह कितने किस्म की मछलियों का होता है ?

चौधरी भाकरूल्ला खां : अध्यक्ष महोदय, भारत में राहू, कतला और मिर्गन नस्ल की मछलियों का सीड पैदा किया जाता है और बाहर से सिल्वरकार्प, कार्प, त्रिसगार और कोमनकार नस्ल की मछलियों का सीड़ मंगवाया जाता है।

श्री हरि सिंह नलवा : स्पीकर साहब, मैं आपके माध्यम से मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि सारे संसार में कितनी किस्म की मछलियां है और उनमें से हरियाणा के अन्दर कितने किस्म की पाई जाती है ?

चौधरी भाकरूल्ला खां : अध्यक्ष महोदय, मछलियों की हजारों किस्में होती है। कोई छोटी है। तो कोई बड़ी है। मछलियों पहाड़ों पर नहीं रहती, समुद्र में रहती है, पानी में रहती है। अगर माननीय सदस्य मेरे साथ चल कर मछलियों की किस्में देखना चाहें तो मैं इनको दिखा सकता हूं (हंसी) ।

साथी लहरी सिंह : स्पीकर सहाब, यमुना नगर जिले में फि ा सीड फार्म कयों नहीं बनाए गए ? यमुना नगर जिला जिसमें

से वैस्टर्न यमुना भी निकलती है और दूसरी नदियां भी निकलती है, इसलिए वहां पर बहुत अच्छे तरीके से फि ा सीड फार्म बनाए जा सकते है। मैं आपके द्वारा मंत्री जी से जानना चहाता हूं कि यमुना नगर, जिले में फि ा सीड फार्म बनाने के लिए प्राथमिकता क्यों नहीं दी गई और क्या यमुना नगर जिले में सरकार का फि ा सीड फार्म बनाने का काई विचार है, अगर है तो वह कब तक बना दिया जाएगा ?

चौधरी भाकरूल्ला खां : अध्यक्ष महोदय, यमुना नगर जिले के दादूपुर में मछलियों की हैचरी बनाई हुई है।

श्री अमरी चन्द मक्कड़ : स्पीकर साहब कौन–सी मछली खाने में अच्छी होती है ? क्या कभी मंत्री जी ने खां कर देखी है ? मैं आपके माध्यम से मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि मछलियां पालने के लिए कौन–कौन से जिलों में पानी के टैंक बनाए हुए है और कहां कहां पर बीज सप्लाई किया है ?

चौधरी भाकरूल्ला खां : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने पूछा है कौन सी मछली खाने में अच्छी होती है ? मछली तो खाने की चीज है, वह दूध नहीं देती और न ही हल चलाती है। मछली को तो खाया ही जाता है। (हंसी)

श्री अध्यक्ष : क्या मंत्री जी बताएंगे कि खारे पानी में मछली की प्रोडक ान बढ़ाने के लिए आपने क्या उपाय किए है?

चौधरी भाकरूल्ला खां : स्पीकर साहब, गुडगांव जिलें में सुलतानपुर में खारे पानी के अन्दर मछली जा रही है और उनको दूधिया मछली कहते है। उसका बीज मद्रास से लाया गया है। मैं हाउस के सामने यह बात भी बताना चाहूंगा कि खारे पानी में जो मछली पाली गई है उसके लिए सारी दुनिया हरियाणा प्रान्त नम्बर एक पर है। पहली फिलिस्तन में खारे पानी में मछली पाली जाती थी।

Oath Cermony at Rohtak

***270. Shri Ram Bhajan Aggarwal:** Will the Minister for Development and Panchayats be pleases to state total expenditure ifany incurred by the Government on the occasion of the Oath Ceremony of the newly elected Sarpaches and Paches of the various Panchayats of the State held at Rohtak on 16th January, 1992.

Mr. Speaker: Extension has been asked for in respect of this question.

श्री राम भजन अग्रवाल: अध्यक्ष माहदय, पंचायत मंत्री बहुत पुराने मैम्बर हैं। इन्होंने परसों भी मेरे एक सवाल की ऐक्सटैं ान मांगी थी और जो सवाल आज लगा है, उस बारे में भी ऐक्सटैं ान मांग रहे है। मैं जताना चाहता हूं कि क्या इनके पास स्टाफ की कमी है या ये मेरे सवाल का, यानि जो हम नए मैंम्बर है, उनका जवाब देना नहीं चाहते ? मैं जानना चाहता हूं कि ये बार बार ऐक्सटैं ान क्यों मांग रहें है ?

विकास मंत्री (राव बंसी सिंह) : स्पीकर सहाब, मैं इनकी इत्तलाह के लिये बता देता हूं कि जो रोहतक में यह पंचों–सरपंचों का सम्मेलन हुआ ाि उस पर सरकार का कोई पैसा खर्च नहीं हुआ। केवल जो आफिसर्ज यहां से गए थे, उनके टी०ए०, डी०ए० का खर्चा हुआ है और वह भी अलग अलग विभागों का हुआ है। इसलिए यह सूचना लेने में समय लगना स्वाभाविक है और इसी वजह से मैनें ऐक्सटैं ान मांगी थी। लेकिन वहां पर जो सरपंच या पंचिज आये, वे अपने खर्चे पर आये यह वह पैसा पंचायतों ने दिया या पंचायत समितियों ने खर्च किय है, इसलिए उनके इस सम्मेलन में आने सेक सरकारी खजाने पर कोई बोझ नहीं पड़ा।

Hadarori Land of Dhani Jattan

***189. Shri Mani Ram Ellenabad:** Will the Minister for Development and panchyats be pleased to state wheter the Panchayat land used for 'Hadarori' of Dhani Jattan situated in front of Bus Stand Ellenabad has been sold to some-one, if so the details thereof ?

विकास मंत्री (राव बंसी सिंह) : हां, श्रीमान जी, ग्राम पंचायती ढाणी जाटां की 2 कनाल 10 मरले भूमि ग्राम पंचायत द्वारा श्री मदन लाल पुत्र देवी राम निवासी भुरटवाला को 35,622. 50 रू० में दिनांक 19–6–89 को बेची गई थी। भूमि का यह हस्तांतरण प्रथम दृश्टि में नियमित नहीं लगता। उपायुक्त सिरसा

को इस मामले पूर्ण छानबीन करके रिपार्ट प्रस्तुत करने के आदे ा दे दिए गए है।

श्री मनीराम केहरवाला : अध्यक्ष महोदय, ऐलनाबाद एक सब–डिवीजन स्तर का भाहर है। वहां पर बस स्टैंण्ड के सामने ढाणी जांटा हड्डारोड़ी की जो जमीन थी, उसको नियमों को ताक पर रख कर बेचा गया है। मै। जानना चहाता हूं कि वह जमीन किस को बेची गई? कृप्या मंत्री महोदय पूरा विवरण बताने का कश्ट करें।

राव बंसी सिंह : अध्यक्ष महोदय, चौधरी मनीराम जी ने जो सवाल किया है, उनकी संतुश्टि के लिए मैं बताना चाहता हूं कि मदन लाला पुत्र देवी राम निवासी भुरटवाला के रहने वाले को यह जमीन, जो पंचायत की थी, बेची गई है। चौधरी देवी लाल जो भूतपूर्व मुख्य मंत्री इस प्रदे ा के रहे हैं, उनके दामाद के ये सगे भाई हैं।

श्री मनीराम केहरवाला : अध्यक्ष महोदय, मैं मंत्री महोदय की जानकारी के लिए बताना चाहता हूं कि उन लोगों ने ऐलनबाद हस्पताल की जमीन और पंचायत की जमीनों पर नाजायज कब्जे किए है। मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या इस जमीन को बेचने से पहले सरकार की परमी ान ले ली गई थी या नहीं ? इन लोगों ने न केवल हस्पताले की जमीन और पंचायत की जमीन को अपने कब्जे में लिया है बल्कि जो हड्डारोड़ी की जमीन

थी, उसको अपने कब्जे में किया है। दूसरा सवाल यह है कि 1952 के ऐक्ट के मुताबिक सरपंय को 50 रूपये से ज्यादा बयनामा करने की अनुमति नहीं है। क्या इस केस में नियमों का उल्लघंन हुआ है या नहीं ? तीसरा मेरा सवाल यह है कि ढ़ानी जाटां से भूरट वाला 25 किलोमीटर पड़ता है। मैं मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं कि क्या जो व्यक्ति उस गांव की जमीन में हिस्सेदारी न रखता हो, क्या वह जमीन खरीद सकता है ? ये जो मेरे तीन चार सवाल है उनके बारे में मंत्री महोदय स्प ट कर दें।

राव बंसी सिंह : स्पीकर साहब, माननीय सदस्य की जानकारी के लिए बताना चाहता हूं कि यह जमीन बस स्टैंड के पास है यह बिल्कुल सही बात है और इस में काई असत्य बात नहीं है। यह जमीन मेन रोड़ पर बस स्टैंड के सामने है, जमीन बहुत कीमती है। अगर आज के हिसाब से इस की कीमत लगाई जाए तो करीब 15 लाख के आस–पास बैठती है। वहां की पंचायत ने फर्स्ट क्लास मैजिस्ट्रेट के पास दावा दायर किया है कि यह जमीन इन्हें नहीं मिलनी चाहिए। मैजिस्ट्रेट ने उस दावे को मन्जूर करते हुए कहा कि यह जमीन पर से मदन लाला का कब्जा हटवाया जाए। मदन लाल ने डिप्टी कलैक्टर के पास अपील कर दी कि जमीन का कब्जा उसके पास है और उसको वह जमीन बाजारी कीमत पर दे दी जाए। कलैक्टर ने उस जमीन का फैसला यह ता नहीं दिया कि जमीन उससे न छुड़वाई जाए बल्कि उसने यह कहा कि जो जो एप्लीके ान उसने दी है, उस पर ए०जी० ए०

इन्कवायरी करे और रिपोर्ट करें कि इस जमीन की बाजरी कीमत कैसे लगाई जाए और कितने में यह जमीन दी जानी चाहिए। ए०जी० ए० ने इन्कवायरी के बाद कुल 35,622.50 रूपये की कीमत पर उस जमीन को बेचने के आदे ा दे दिए। खण्ड विकास अधिकारी कोयह आदे ा दिए गए कि पंचायत की यह जमीन बेच दी जाए। इस ढंग से इस पंचायत की भामलात भूमि को खुर्द बुर्द किया गया। जहां तक इस बात का प्र ान है कि सरकार या डायरेक्टर पंचायत से इस को बेचने की कोई इजाजत नहीं ली गई तो इस बारें में डायरेक्टर पंचायत या सरकार से कोई परमि ान नहीं ली गई। आफिसर्ज ने नीये ही अनडयू प्रै ार में आ कर जमीन को बेच दिया।

श्रीमती चन्द्रावती : क्या मंत्री जी यह बताएंगे कि इस जमीन को सरकार दोबारा अधिग्रहण कर के पंचायत को दे देगी और इस कार्य को जल्दी करने के लिए काई पग उठाएगी?

राव बंसी सिंह : अध्यक्ष महोदय, मैं बहन जी की सूचना के लिए इन्हें बताना चाहता हूं कि सरकार ने डिप्टी कमि ानर, सिरसा को आदे ा दिए है कि इस जमीन की इन्कवायरी करके रिपोर्ट भीघ्रति ीघ्र भेजी जाए। चूंकि इस जमीन को नाजायज तौर पर बेचा गया है इसकलए इन्कवायरी के आधार पर जो भी ऐक ान बनता है वह सरकार अव य लेगी।

श्री मनी केहरवाला : अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि इस घपले में जो भी ऑफिसर रिस्पोंसिबल है, उसके खिलाफ अब तक क्या कार्यवाही की गई है और आगे क्या करने का इरादा है?

राव बंसी सिंह : अध्यक्ष महोदय, सरकार की बहुत खुले मन से मन ा है कि जो सारे हरियाणा मैं नाजायज कब्जे करके हड़पी गई है, उन लोगों के खिलाफ हरियाण सरकार सख्त से सख्त कार्यवाी करेगी। जहां तक इस जमीन का ताल्लुक है, चाहा है, उन दोशी अधिकारियों के खिलाफ डिप्टी कमि ानर की इन्क्वायरी की रिपोर्ट आने पर सख्त से सख्त एक ान लिया जाएगा।

श्री मनी राम केहरवाला : अध्यक्ष महोदय, मैं मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं कि 1952 के ऐक्ट के तहत सरपंच 50 रूपये से ज्यादा का बयनामा नहीं कार सकता है, क्या इस एक्ट में कोई बदली हो गयी है या फिर यह गलत तरीके से करवाया गया है?

राव बंसी सिंहः अध्यक्ष महोदय, मैं इनकी सूचना के लिए बताना चाहता हूं कि कौमन लैण्ड ऐक्ट के तहत जो कार्यवाी की गई है, यह सारी नाजायज थी क्योंकि डायरेक्टर पंचायत से इसकी कोई परमि ान नहीं ली गई। कुछ भार्तें हैं जिनके तहत जमीन दी जा सकती है। एक तो व्यक्ति उसी बस्ती का रहने वाला

हो, चूल्हा टैक्स देता हो। और अगर पांच साल से उसका वहां मकान बना हुआ है तो उसको जमीन बेची जा सकती है और उस पर बाजारी कीमत लगा कर कम्पन्ो ान दे कर जमीन उस व्यक्ति को दी जा सकती है।

श्रीमती चन्द्रावती : अध्यक्ष महोदय, क्या मंत्री जी बताएंगे कि जैसे जमीन हुड्डा के लिए या दूसरी जगह अधिग्रहण की जाती है, क्या उसकी डिप्टी कमि ानर द्वारा इंक्वायरी की जाती है?

राव बंसी सिंह : अध्यक्ष महोदय, मैं बहन जी को सूचना के लिए बताता हूं कि इण्डस्ट्रियल परपज के लिए या कमर्ि ायल परपज के लिए या पंचायत के खुद के इन्ट्रैस्ट के लिए जब जमीन सेल की बात आती है तो डीडज की बात आती है और उसकी बिल्कुल इनक्वायरी की जाती है और उस जमीन की सेल करने की परमि ान डायरेक्टर पंचायत और सरकार से ली जाती है।

श्री अमर सिंह : स्पीकर सर, मैं मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि कौमन लैण्ड ऐक्ट के तहत क्या किसी जमीन की रजिस्ट्री डायरैक्टर पंचायत की ऐप्रूवल के बगैर हो सकती है, अगर नही ंतो फिर 8–9 महीनें का समय बीत जाने के बाद भी अभी तक इस केस में कार्यवाही क्यों नहीं हुई और क्या इसको ये डेट बाऊंड करेंगे ?

राव बंसी सिंह : अध्यक्ष महोदय, ऐसा है कि हरियाणा बहुत बड़ा है। इसमें बगैर किसी कंपलेंट के पता नहीं लग सकता। जितनी पंचायतें है, गांव है, कहीं भी कोई जमीन हो सकती हैं यदि हमारे पास कम्पलेंट होती है तो उसके ऊपर हम तुरन्त कार्यवाही करने की को ि ा ा करते है। कम्पलेंट आने पर यह पता लगाते है कि किसने नाजायज जमीन दे रखी है।

श्री मनीराम केहरवाला :अध्यक्ष महोदय, मैं मुख्य मंत्री जी से यह अर्ज करना चाहता हूं कि जितने भी पिछले रिजीम में घपले हुए है पंचायत की जमीन पर कब्जे, हास्पिटल की जमीन पर कब्जे, हडवाड़ा पर कब्जा, घरों पर कब्जे, इन कब्जो के कारण आफिसर्ज के खिलाफ तो कार्यवाही होनी ही चाहिए लेकिन इसके साथ ही साथ वह पार्टी जो यह कब्जा करती है उसके खिलाफ भी पर्चा दर्ज होकर मुकद्दमा दायर होना चाहिए।

मुख्य मंत्री (चौधरी भजन लाल) : अध्यक्ष महोदय, मनीराम जी ने जो बात कही है इसमें कुछ वजन है। पिछले रिजीम में बहुत भारी नाजायज कब्जे मकानों पर और जमीनों पर हुए है। जमीनों में का तकार वाी भी, म्यूनिसिपल कमेटी वाली भी, हास्पिटल की भी और यहां तक कि हडवाडा की जमीन भी इन्होनें नहीं छोड़ी। जहां मरे हुए प ाुओं को डालते है। मरे हुए प ाुओं की भाम ाान भूमि भी इन्होनें नहीं छोड़ी। (ोम– ोम) इससे ज्यादा अन्याया की और क्या बात हो सकती है ? लेकिन हम पूरी कार्यवाही करेंगे। अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय सदस्यों से

निवेदन करूंगाा कि अगर कहीं किसी के नोटिस में ऐसी कोई बात आए कि फलां–फलां जगह यह नाजायज कब्जे हुए है, फलां–फलां जगह गलत तरीके से जमीन ट्रांसफर की गई है तो वह बात हमारे नोटिस में लाएं हम कानून के मुताबिक सख्त से सख्त कार्यवाही करेंगे, किसी को माफ नहीं करेंगे।

Upgradation of jakhal Mandi School

***163. Shri Pir Chand :** Will the Minister for Education be pleased to state whether there is any proposal under consideration of the Government to upgrade the Jakhal Mandi School to 10+2 system school ; if so, the time by which the aforesaid school is lidely to be upgraded?

ि ाक्षा मंत्री (श्रीमती भाान्ति देवी राठी) : जी नहीं।

श्री पीर चन्द : अध्यक्ष महोदय, जाखल गांव में एक मंडी बहुत अच्छी है। पिछली सरकार ने यह वि वास दिलाया था कि हम यहां 10+2 स्कूल बनाएंगें।। सब ने मिलकर वहां स्कूल की बिल्डिंग को पूरा किया और 15 कमरे भी बनवाये लेकिन आज वह बिल्डिंग खराब हो रही है। क्या मंत्री महोदया इस काम को प्रायरिटी देकर वहां स्कूल बनवाने की कृपा करेंगीं क्योंकि यह

बहुत जरूरी है। (विघ्न) अगर पिछली सरकार ने कोई गलती की तो क्या यह सरकार भी करेगी।

श्रीमती भाांति देवी राठी : अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से भाई पीर चन्द जी को बताऊंगी कि जो हमारा माप दण्ड है उसके हिसाब से हमें 14 कमरे चाहिए, 6 एकड़ जमीन और 5 हजार की आबादी होनी चाहिए और कम से कम नौंवी और दसवीं में विद्यार्थियों की संख्या 150 होनी चाहिए। जहां तक जाखल मंडी की बात है, कमरे तो 15 है इसमें कोई दो राय नहीं है लेकिन आबादी केवल 1000 है जो हमारे माप दण्ड के अनुसार पूरी नहीं होती। जहां तक बच्चों की बात है वे 150 होने चाहिए किन्तु वे 120 है। (विघ्न) इन्होनें एक बात और कहीं कि तत्कालीन सरकार ने इस स्कूल की बिल्डिंग को मन्जूर कर दिया था। अब तक तो इसे बन जाना चाहिए था। तत्कालीन सरकारी की बात अब मैं कहा तक बतांऊ। उन्होंने 350 स्कूल अपग्रेड कर दिए थे लेकिन बजट के अन्दर कोई प्रावधान नहीं किया था। अध्यक्ष महोदय, मैं इनको बताा चाहूंगी कि जब सरकार कोई निर्णय लेती है तो वित मंत्री को योजना विभाग द्वारा बजट में उसका प्रावधान करना पड़ता है। (विघ्न) परन्तु उन्होनें ऐसा कोई प्रावधान नहीं किया, केवल कागजों में 350 स्कूल बना दिये। भाायद भाई पीर चन्द जी भी उसी से प्रताड़ित है।

Starred Question No. 200

Mr. Speaker: This question is deleted as the member, Shri Sampat Singh, Stands suspended from the service of the House.

Now, the Questions hour is over.

अतारांकित प्र न एवं उत्तर

P.W.D. (B&R) Rest Houses in the State

20. Shrimati Chandravati: Will the Chief Minister be pleased to state-

(a) the number of P.W. (B&R) Department Rest Houses as at present in the State;

(b) the number of time, the curtains and bed covers of the aforesaid Rest Houses have been replaced during the period from 1986 to 1992 to-date togetherwith the details of expenditure incurred thereon ; and

(c) the yearwise amount spent on white wash, paint and varnish on each of the Rest Houses during the period as referred to in part (b) above ?

मुख्य मंत्री (चौधरी भजन लाल) :

(क) हरियाणा राज्य में 56 लोक निर्माण विभाग के विश्रामगृह है।

(ख) तथा (ग) पर्दे तथा बैड कवर जब भी आव यकता होती है, बदल दिये जाते है। सफेदी तथा रंग रोगन भवन को साफ सुथरा रखने के लिए अवा यकता अनुसार किया जाता है। 6

वर्श की सूचना प्राप्त करने का कार्य काफी अधिक है। यह सूचना प्राप्त करने में लगने वाले समय और श्रम को देखते हुए इससें काई लाभ होने वाला नहीं है।

जनता पार्टी के सदस्यों के निलम्बन सम्बन्धी मामला

चौधरी बीरेन्द्र सिंह : स्पीकर सर, मेरी गुजारि ा यह है कि आज जब मै। विधान सभा आ रहा था तो विधान सभा बिल्डिग का जो ऐन्ट्रैस गेट है, वहां समाजवादी जनता पार्टी के सभी विधायक खड़े हुए थे और बहूत सारे लोग जिन्होंने वाच एण्ड वार्ड का बिल्ला लगाया हुआ था, उनका रास्ता रोक कर खड़े हुए थे एस० जे०पी० के विधायकों ने बताया कि वे विधान सभा में आ रहे थे। उनमें से काई लाईब्रेरी में जाना चाहता था, काई सी० ए० टी० ए० ब्रांच में जाना चाहता था।

सिंचाई तथा बिजली मंत्री (चौधरी भाम ोर सिंह सरजेवाला): आन ए प्वायंट आफ आर्डर, सर। अध्यक्ष महोदय, मै। यह कहना चहाता हूं कि क्या वे लोग इससे पहले भी कभी लाइब्रेरी में गए थे?

श्री बंसी लाल: अध्यक्ष महोदय, हो सकता है वे लोग रोज लाइब्रेरी में जाते हों । क्या इन्होनें कभी उनको देखा है ?

चौधरी वीरेन्द्र सिंह: स्पीकर सर, यहां विधान सभा में आपका हुक्म चले, हमें इस पर तनिक भी किसी प्रकार की कोई आपत्ति नहीं है। विधान सभा में आपका हुक्म चले, हमें इस पर

तनिक भी किसी प्रकार की कोई आपत्ति नहीं है। विधान सभा में जितने भी सदस्य है, उनके कुछ अधिकार हैं। तथा आप उनके संरक्षक है। जिस दिन आपने उनको सस्पैंड किया, वह केवल डेलीब्रे ान से किया था। They cannot participate in the delbrations of the Assembly, लेकिन आज उनको यहां तक आने से भी रोक दिया ? ऐसा ओद ा आपका नहीं हो सकता कि वे लाइब्रेरी में भी नहीं जा सकते, आपके कमरे तक भी नहीं जा सकते, थे डिप्टी स्पीकर से भी नहीं मिल सकते, सैक्रेटरी से भी नहीं मिल सकते तथा यहां आकर अपने दूसरे काम नहीं कर सकते। इस प्रकार का कोई आदे ा आपकी तरफ से मेरे हिसाब से तो नहीं हो सकता।

स्पीकर साहब, सबसे ज्यादा दुखः की बात तो यह है कि वे लोग उनको घेरे खड़े थे। वे आपके ही वाच एंड वार्ड स्टाफ के बिल्ले लगाये हुए थे। और भजन लालल जी के नारे लगा रहें थे। भजन लाल जिन्दाबाद कह रहें थे। उस समय प्रैस के एक भाई भी आ गये थे, उन्होंने इस बात को सुना होगा। ए० सी० चौधरी जो मंत्री है वे भी बाई–चांस वहां पर आ गये थे, उन्होनें भी देखा था। वे भाायद जान–बूझ कर अब हाऊस से स्लिप कर गये है। हम अगर चाहेंगे तो भी वे इस बात की गवाही नहीं देंगें तो मेरी गुजारि ा यह है कि यह निहायत ही आपत्ति जनक बात है। अगर इस प्रकार से सदस्यों के राईट्स को यों ही कुचला गया और उनके साथ इस प्रकार से बर्ताव किया गया तो

यह बिल्कुल ही अनडैमोक्रेटिक है। फिर यहां हालत अच्छी नहीं रहेगीं। हर जगह हर स्टेज पर इस प्रकार की कन्फ्रंटे ान आयेगी । आप इसको संभालिये आपका पुरा स्टेट्स है। आपको जो अख्तियार हाऊस ने दिये हुए है उस पर और आपकी पर्सनैलिटी पर एक बहुत जबरदस्त रिफलैक्ा न है। इसलिये मैं गुजारि ा करूंगा कि इस बात की छानबीन की जाये कि उनके साथ धक्का–मुक्की कैसी की गई और किसने की। उनके साथ जो कांग्रेस पार्टी के लोग थे वे कांग्रेस पार्टी के ही लोग थे या कहीं और से बुलवाए हुए थे। नारे तो वे उनके लगा रहे थे इस बात की थोरी इंक्वारी होनी चाहिए और जो भी इस बात में कलप्रिट मिले उनको मुनासिब सजा दी जाये। मैं एक बार फिर दोहराना चाहूंगा कि यह बात सरकार के लिए अच्छी नहीं है यह बात आगे रीपीट नहीं होनी चाहिये। अगर ऐसा हुआ तो इसके लिए सरकार प चाताप करें और गिल्टी पर्सन को पूरी सजा दे।

श्री बंसी लाल : अध्यक्ष महोदय जैसे चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी ने बताया अबर उन आनरेबल मैम्बर्ज ने इनको बताया है कि इस तरह से उनको रोका गया, तो यह बहुत ही आपत्तिजनक बात है। दूसरी बात यह है कि उनको हाऊस से एक्सपैल नहीं किया सस्पैंड किया गया है। एक्सपैल नहीं किया गया है। ऐक्सपल ान एक अलग बात है। सस्पै ान एक अलग बात है। उनको हाउस की प्रोसीडिंग्ज से सस्पेंड किया गया है। उनको आप लोबी में आने से नहीं रोक सकते। अबर वेक लौबी में आकर

बैठना चाहें तो बैठ सकते है। अगर वे विधान सभा सैक्रेटेरियेट के किसी आफिस जाना चाहें तो जा सकते है। इस तरह से उनको रोकना तो बहूत आपत्तिजनक बात है। यह तो डैमोक्रेसी का गला घोंटने वाली बात है इसलिये मैं आपसे निवेदन करूंगाा किउनकी सस्पैं ान आज के बाद रिवोक की जाये। हमारे यहां डैमोक्रेसी है और डैमोक्रेसी में आपोजी ज्ञन को तो होना ही चाहियें वह तीन दिन तक बाहर रह चुके हे, यही बहूत है। यह बात बिल्कुल सही है कि यहां पर पुलिस के लोग सी० आई० डी० कि लोग आपकी विधान सभा के सिक्योरिटी स्टाफ के लोग बिल्ले लगााकर यहां हाऊस में भी रहते है और हम एक दो दिन में उनको यहां पर पकड़ कर आपको भी दिखायेंगे (व्यवधान) पकड़ देंगे थोड़ा इन्तजार करो, आराम से पकड़ देंगे। अध्यक्ष महोदय, जो इस तरह का रवैया है इस तरह का तरीका माननीय सदस्यगण के साथ बिहेव करने का जो है यह बहुत सी डिप्लोरेबल है। इस किस्म की बात नहीं होनी चाहिये। उनको लोबी में भी आने देना चाहिए। आपसे मै। दोबारा फिर यही प्रार्थना करूंगाा कि उनकी सस्सपैं ान भी रीवोक कर देनी चाहिये (ाोर एवं व्यवधान)

श्री अकर सिंह ढांड़े : स्पीकर साहब, मै आपको यह बताना चाहता हूं कि श्री सम्पत सिंह जी को धक्के मार–मार कर, धक्के दे देकर बाहर निकाला गया यह बिल्कुल ..... .की गयी है। यह विधान सभा के आदमी थोड़े है ते तो .... है। इन्होनें .....बाहर से बुला रखे है। उन्होनें मैम्बर्ज को

धक्के दे–देकर बाहर निकाला है। (व्यवधान एवं ाोर) .....मैं आपसे यह रिक्वैस्ट करूंगा कि यह जो .....रखे हुए है, इनको बाहर निकालो।

श्री अध्यक्ष : 'गुण्डे और गुण्डागर्दी के लफ्ज' रिकार्ड न किये जायें। यह गल्त है कि उनको धक्के मार कर निकाला गया।

श्री अमीर चन्द मक्कड़ : अध्यक्ष महोदय, चौधरी वीरेन्द्र सिंह जी ने और चौधरी बंसी लाल जी ने जो कहा है, मैं भी उनसे सहमत हूं। मेरी आपसे यह प्रार्थना है कि अगर व मैम्बर्ज आप के चैम्बर में आकर आपसे बात करना चाहते है तो उनको आने देना चाहिए ताकि वे अपनी बात आपसे कह सकें। जब उनसे आपकी बात हो जाये और वे प चाताप कर लें, उसके बाद देख लिया जाये कि क्या करना है। उन मैम्बर्ज पर इतनी पाबन्दी भी नहीं होनी चाहिए कि वे आप तक भी न आ सकें (व्यवधान एवं ाोर)

सदस्य का नाम लेना/सदस्य का निलम्बन

श्री अमर सिंह ढांड़े : स्पीकर साहब, हमारी पार्टी के मैम्बर्ज के साथ बहुत ज्यादती हुई है।

श्री अध्यक्ष : बैठिये, इसका जवाब देंगे।

श्री अमर सिंह ढांड़े : स्पीकर साहब, आप मेरी बात तो सुनिए।

श्री अध्यक्षः आप कृप्या बैठिए और जवाब तो सुनिए।

श्री अमर सिंह ढांडे : आप कृप्या पहले मेरी बात सुनिए।

श्री अध्यक्ष : इनकी कोई बात रिकार्ड न की जाए (ाोर)

श्री अमर सिंह ढांडे : स्पीकर साहब .....

श्री अध्यक्ष : ढांड़े साहब मुझे अलग से चैम्बर में मिल लें। अब आप बैठ जाइऐ (ाोर एवं व्यवधान)

श्री अमर सिंह ढांडे : स्पीकर साहब .....

Mr. Speaker : Your behaviour is disorderly today also,. Yesterday also you behaved in this manner. I warn you. Please take your seat and let the House Proceed.

(At this stage Shri Amar Singh Dhanday again started speaking)

Mr. Speaker: I name shri Amar Singh d\Dhanday. He may please withdraw from the House (Interruptions).

(श्री अमर सिंह ढांडे सदन से बाहर नहीं गये तथा बोलते रहे)

श्री अध्यक्ष : मा र्ल तथा वाच एंण्ड वार्ड स्टाफ की सहायता से इनको बाहर ले जायें। (व्यवधान)

(इस समय सार्जेन्ट एट आर्म्ज वाच एंड वार्ड की सहायता से माननीय सदस्य को सदन से बहाल ले गये।)

Irrigation & Power Minister (Shri Shamsher Singh Surjewala) : Sir, I beg to move –

That Rule 104 of the rules of Procedure and conduct of Business in the House be suspended in its applkication to the motion regarding the suspension of Shri Amar Singh Dhanday (Guhla) (interruptions)

Mr. Speaker : Question is –

That Rule 104 of the rules of Procedure and conduct of Business of the House be suspended in its applkication to the motion regarding the suspension of Shri Amar Singh Dhanday (Guhla).

The motion was carried

Irrigation & Power Minister (Shri Shamsher Singh Surjewala) : Sir, I beg to move-

That Shri Amar Singh Dhanday (Guhla) be suspended from the service of the House for the remainder sittings of this week for his mis-conduct, mostirresponsible behaviour unbecoming of the member ofthis August House and his grossly disordely conduct in the House.

Mr. Speaker: Motion move –

That Shri Amar SinghDhanday (Guhla) be suspended from the service of the House for the remainder sittings of this week for mis-conduct, most irresponsible

behaviour unbecoming of the Member of theis August House and his grossly disorderly conduct in the House.

Mr. Speaker: Question is –

That Shri Amar SinghDhanday (Guhla) be suspended from the service of the House for the remainder sittings of this week for mis-conduct, most irresponsible behaviour unbecoming of the Member of theis August House and his grossly disorderly conduct in the House.

The motion was carried

जनता पार्टी के सदस्यों के निलम्बन समबन्धी मामला (पुनरारम्भ)

मुख्य मंत्री (चौधरी भजन लाल) : अध्यक्ष महोदय, आदरणीय सदस्य श्री बीरेन्द्र सिंह व श्री बंसी लाल जी ने सपा के मैंम्बरों की थोड़ी सी वकालत की है। प्रजातन्त्र का तकाजा है कि प्रजातन्त्र में अपोजी ान का होना बहुत जरूरी है। अगर अपोजी ान न हो तो सरकार का वह महत्व नहीं रहता जो रहना चाहिये। सरकार में जो कमियां है, सरकार में जो बुराईयां हों उसके खिलॉ जोरदार भाब्दों में आवाज उठानी चाहिए। लेकिन जिस तरह का रवैया उनका रहा वह ठीक नहीं रहा। और उनकी बाकायदा प्लानिंग थी कि हाऊस की कार्यवाही नहीं चलने देंगे उन्होंने कितनी बार आपके आदे ाों की अवहेलना की । मर्यादा और सिद्ांत नाम की कोई चीज ही नहीं रह गई थी। उनका मकसद था कि किसी तरह से उनका नाम और फोटो अखबारों में आ जाए। मुझे खु ाी है कि ट्रिब्यून और एक दो और अखबारों ने

बहुत अच्छे ऐडिटौरियल लिखे है। अगर वे उनको पढ़ लेंगे तो उनके रवैये में जरूर चेंज आना चाहिए। हम उनको सदन में सारी बाते कहने के लिए पूरा मौका देते रहे है। वह बजट सै ान है। और तीन हफ्ते का सैं ान है। वे एक–एक इ ाू को उठा सकते है, कोई पाबन्दी नहीं है। लेकिन उनका रवैया ठीक नहीं था अब सस्ती लोकप्रियता चाहें चौधरी बंसी लाल जी ले, चाहे चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी लें। उन्होंने कहा कि ऐसा नहीं होना चाहिए था। उन्होने यहां पर कहा कि लोग भजन लाल जिन्दाबाद और मुर्दाबाद के नारे लगा रहें है। मैं बताना चाहता हूं कि अगर ये भजन लाल मुर्दाबाद के नारे लगा सकते है तो हमारे वर्कर भजन लाल जिन्दाबाद के नारे भी लगा सकते हैं।

चौधरी वीरेन्द्र सिंह : आपके वर्कर बे ाक नारे लगाएं लेकिन वाच एंड वार्ड स्टाफ को नारे नहीं लगाने चाहिए। (ाोर)

आबकारी तथा कराधान मंत्री (श्री ए०सी० चौधरी) : स्पीकर साहब, मैं इनके साथ ही था स्टाफ के किसी भी आदमी ने नारे नहीं लगाए।

चौधरी भजन लालः अध्यक्ष महोदय, वाच एंड वार्ड स्टाफ ऐसा नहीं कर सकतां हमारे वर्कर तो नार लगा सकते है। तो मेरे कहने का मतलब यह है कि अगर वे महसूस कर लें और आपकी तसल्ली हो जाए कि वे अपना रवैया आगे से ठीक रखेंगे तो हमें उन्हें बा–इज्जत हाउस में बुलान का कोई एतराज नहीं

है। अध्यक्ष महोदय, आपने कल भी देखा और आज भी देखा कि उनके मैंबर श्री अमर सिंह ढांडे का क्या रवैया था। वह परसों उनके साथ नहीं था।

चौधरी बीरेन्द्र सिंह : हमने उनका रवैया डिफैंड नहीं किया लेकिन वाच एंड वार्ड स्टाफ को यह अख्तियार नहीं है कि मैम्बरों की बेइज्जती करें। यह कहां का रूल है कि उनको स्पीक सहाब के कमरे तक भी नहीं आने दिया जाए? वाच एंड वार्ड का बिल्ला लगा कर कांग्रेस के लोगों ने नारे लगाएं, हमें इस बात पर एतराज है।

चौधरी भजन लाल : यह काम न आपका है और न हमार है कि वाच एंड वार्ड के लोग कहां तक उनको आने दें और कहां तक न आने दें। यह काम तो स्पीकर साहब का है, न सरकार का है और न अपोजी ान के दोस्तों का है। यह स्पीक सहाब को देखना है कि ये लोग क्या गड़बड़ करेंगें और उनका रवैया कहां तक सीमित रहेगा। उनको रोकने का, सरकार का कोई काम नहीं है। चौधरी बंसी लाल ने कह दिया कि सी० आई० डी० के लोग वाच एंड वार्ड का बिल्ला लगाकर अन्दर आए। मु कल तो यह है कि उनको अपना जमान याद आ गया। ये समझते है कि जैसे वे करते थे, वैसे ही आज की सरकार करती है। आप सी० आई० डी० का एक भी आदमी अन्दर दिखा दे ंतो आप की बात मान लेंगें आपको वैसे ही गल्त इल्जाम नहीं लगाना चाहिए। अध्यक्ष महोदय, आपने बहुत अच्छा कन्ट्रोल किया। मैं तो अब भी

कहता हूं कि माननीय सदस्य उस बात को महसूस कर लें तो वे हाउस में आ सकतें है। लेकिन यह स्पीकर साहब ने देखना है कि उनका रवैया ठीक रहेगा या नहीं रहेगा। तो मैं कहना चाहता हूं कि आपने कह दिया कि बाहर सरकारी आदमी नारे लगा रहे है और उन्होनें वाच एंड वार्ड के बिल्ले लगा रखें है। मैं बताना चाहता हूं कि वाच एंड वार्ड स्टॉफ के अलावा किसी ने बिल्ले नहीं लगा रखें। वैसे ही गल्त इलजाम लगाना ठीक नहीं है।

श्री बंसी लाल : स्पीकर साहब, मुख्य मंत्री जी ने कहा कि मेरे जमाने में पुलिस के आदमी आते थे। मुझे मेरा जमाना याद आता है। यह तो इनके दिमाग की उपज है, मेरा कोई कसूर नहीं है मेरे जमाने में कोई पुलिस का आदमी आया और न किसी ने कोई एतराज किया। इन्होनें कहा कि उनका रवैया यह था इसलिए उनको नहीं आने दिया जात। अगर उनका रवैया ऐसा था तो उनको सजा दे दी गई। सजा उनको लाइफ लोंग नहीं दी जा सकती और फिर उनको आपने सदन से निकाला है। आप उनको लौबी तक आने में और सैक्रेटेरिएट में आने से बिल्कुल नहीं रोक सकते। अगर कोई रोकता है तो गलत है। इसलिए मैं यह समझता हूं कि यह जो एक ान है चाहे किसी के भी पार्ट पर है, यह ठीक नहीं है। स्पीकर साहब, अगर उनको आपका भी यह हुक्म है कि उन सदस्यों को सदन के भवन में ही न घुसने दिया जाए तो यह बिल्कुल ठीक नहीं है। आपको कानून कायदे से बाहर नहीं जाना चाहिए। यह माननीय सदस्य सदन की लोबी तक भी आ सकते है।

आपने उनको हाउस की प्रोसीडिंग्ज से सस्पैंड किया हैं, न कि भवन से िकवे इस भवन में भी नहीं आ सकतें इस सदन की लौबी में भी नहीं आ सकते, कल ये यह भी कह देंगे कि वे चण्डीगढ़ में भी नहीं आ सकते, यह बात ठीक नहीं हैं नारे चाहे कोई किसी के लगाए, हमें नारों से कोई नफरत नहीं है। मैं तो यह कहता हूं कि उनको सदन की लौबी तक, सदन के दफ्तर तक आने की इजाजत तो है ही। स्पीकर साहब, आप उनको कानून कायदे के मुताबिक वहां तक आने से नहीं रोक सकते। स्पीकर साहब, मैं फिर यह प्रार्थना करूंगा कि उनकी सस्पैं ान को रिवोक किया जाए।

श्रीमती चन्द्रावती : स्पीकर साहब, में भी चौधरी वीरेन्द्र सिंह जी और चौधरी बंसी लाल जी बात का समर्थन करती हूं कि विधान सभा प्रांगण में हर मैम्बर को आने की इजाजत होनी चाहिए। अगर आपने उन माननीय सदस्यों को विधान सभा प्रांगण में आने के कलए मना किया है तो आपको उस पर पुनर्विचार करना चहिए। इस बारे में मैने आपसे कल भी रिक्वैस्ट की थी जिन माननीय सदस्यों को हाउस की प्रोसीडिंग्ज से सस्पैंड किया गया है इस बारें में आपको पुनर्विचार करना चाहिए और उनको हाउस में आने की इजाजत होनी चाहिए।

स्पीकर साहब, मैं एक बात और कहना चाहती हूं। आज हाउस में दो इनवीटे ांज कार्ड बंटे है। एक तो माननीय मंत्री जी के नाम से है, वह तो ठीक लेकिन जो दूसरा कार्ड है, उस पर

लिखा हुआ है कि इस फंक ान के चीफ गैस्ट चीफ सैक्रेटरी चीफ होगें। इसमें हमें इस बात का एतराज है कि अगर किसी फंक ान का चीफ सैक्रेटरी होता है तो उसमें मंत्रीगण और विधायकों की क्या पोजि ान होगी ? यह इनवीटे ान मंत्रियों को भी गया है, एम०एल०एज० के भी गया है। मैं समझती हूं कि प्रोटोकोल के अनुसार मंत्री और विधायक चीफ सैक्रटरी से नीचे नहीं हैं और यह रवायात गलत है।

श्री अध्यक्ष : इस बारे में हाउस में डिस्क ान की कोई जरूरत नहीं है।

चौधरी भजन लाल : अध्यक्ष महोदय, आप सभी जानते है कि अगर कोई फंक ान हो, उसमें चीफ सैक्रेटरी गेस्ट हो और उस फंक ान में मंत्रियों और एम०एल०एज० को इनवीटे ान कार्ड भेजे जाये तो यह कोई बुरी बात नहीं है । इसमें बुरी बात क्या है ?

श्री बंसी लाल : आप प्रोटोकाल के मुताबिक चीफ सैक्रेटरी के मातहत नहीं है। आप चीफ सैक्रेटरी से नीचे नहीं है, उनसे ऊपर है। अगर किसी फंक ान का चेयरमैन कोई मंत्री हो और वह उस फंक ान को प्रिजाइड करता हो तो वह चाहिए। एम०एल०एज० को इनवाइट नहीं करना हैं, चीफ सेक्रैटरी आल नहीं है।

चौधरी भजन लाल : यह कौन से विधान में लिखा है?

श्री अध्यक्ष : यह चैम्बर से बाहर का मामला है, इसलिए it should not be discussed here.

श्रीमती चन्द्रावती : स्पीकर साहब, मैने कोई अप ाब्द नहीं काह है और न ही कोई अपमानित बात कही है तो मेरी बातें रिकार्ड क्यों नहीं होगी ? हमने इसको प्रोटोकोल के हिसाब से गलत समझा है । हमने इस बात को उचित नहीं समझा अगर किसी मंत्री की तरफ से कोई इनवीटे ान कार्ड हो और वह उस फंक ान का चीफ गैस्ट हो या उस फंक ान को प्रिजाइड करता हो तो हमें इसके बारे में कोई एतराज नहीं होता लेकिन प्रोटोकोल के मुताबिक यह गलत रवायात है। मैं पर्सनली किसी के अगेंस्ट नहीं हूं।

Mr. Speaker: As the matter does not relate to the House, it may not be discussed any further.

श्री बंसी लालः स्पीकर साहब, मेरी एक सबमि ान है। मैं आपसे यह रूलिंग चाहूंगा कि जो सजपा के माननीय सदस्य है, उनको विधान सभा के भवन के मेन गेट पर रोका गया और अगर उनको रोका गया तो क्यों रोका गया? वे विधान सभा कि बिल्डिंग के अन्दर आ सकते हैं या नहीं आ सकते? इस बारे में मैं आपकी रूलिंग चाहता हूं।

श्री अध्यक्षः वे प्रसिंक्ट्स में आ सकते है। लाइब्रेरी में भी आ सकते है। वे सी०टी०ए ० ब्रांच में भी आ सकते है। मगर

यहां आ कर फिर उनका बिहेवियर नारेबाजी का हो तो यह ठीक नहीं है।

चौधरी बीरेन्द्र सिहंः स्पीकर साहब, हमनें जो आरोप लगाए है, क्या आप उस बारे में इंक्वायरी करेंगे? सजपा के सदस्यों के साथ जो वाका हुआ है, जिसके बारे में हमने बातें कहीं है क्या वह बातें सत्य है, झूठी है या फर्जी? इस बारे में आपकी क्या आबर्जेवे ान है? इस बारे मैं आप हमें कब बताऐंगे?

श्री अध्यक्षः ए० सी० चौधरी साहब आपके साथ थे, उन्होने बता ही दिया है कि किसी वाच एंड वार्ड के आदमी ने नारेबाजी नहीं की।

वाक आऊट

चौधरी वीरेन्द्र सिंहः स्पीकर साहब, जो बातें हमने कहीं है उनके ऊपर आप अपनी को ओबजर्वे ान नहीं दे रहे। अगर हमारी बातों की कोई अहमियत ही नहीं है तो फिर हम सदन से उठ कर बाहर चले जाते है। (विघ्न) क्या हम समझे कि हमे आपसे प्रोटेक ान मिलना बन्द हो गया है? आप इस केस की इन्वायरी करेंगे या नहीं करेंगे कि उनको रोका गया या नहीं? (ाोर)

श्री अध्यक्षः इस बारे में गर्वनमैंट से कमैंटस लेंगे और फिर बात करेंगे।

चौधरी वीरेन्द्र सिंहः हमारी बात को आप मान नहीं रहें है। (ाोर एवं विघ्न)

श्रीमती चन्द्रावतीः स्पीकर साहब, उनको अन्दर आने से रोका गया है। आप हमारी बात को नहीं सुनते तो फिर हमें वाक आउट करना पड़ेगा क्योंकि फिर हमारे यहां पर बैठने का कोई फायदा नहीं होगा। (ाोर एंव व्यवधान)

लोक सम्पर्क राज्य मंत्री (श्री सुरेन्द्र मदान): स्पीकर साहब, जब मैं विधान सभा में आ रहा था तो समाजवादी जनता पार्टी के सदस्य नारेबाजी कर रहे थे और दूसरी तरफ खड़े कुछ कांग्रेस के कार्यकर्त्ता भी नारेबाजी कर रहे थे। मैने खुद एस०जे०पी० के विधायकों को इन्वाइट किया कि आओ मेरे साथ अन्दर चलो वर वे नहीं आये। वे वहां पर जानबूझ कर तमा ाा दिखाना चाहते थे इसलिए नारेबाजी कर रहे थे। किसी ने उनको अन्दर आने से नहीं रोका। मैनें खुद उनको चलने के लिए कहा लेकिन उनमें से कोई भी विधायक अन्दर आने के लिए तैयार नहीं हुआ।

Mr. Speaker: Hon'ble members, I have received a calling attention motion no.4 from Shri Bansi Lal, Karan Singh Dalal ----------(Interruptions)

श्री बंसी लालः अध्यक्ष महोदय, हमारी आपसे यह प्रार्थना है कि पहले यह स्पश्ट किया जाये कि उनको आने से रोका गया था या नही? वे यहां विधान सभा की बाकी बिल्डिंग में

या सदन की लोबी तक आ सकते है या नहीं? वे यहां विधान सभा की बाकी बिल्डिंग में या सदन की लोबी तक आ सकते हे या नही? इस बारे में मैं आपकी रूलिंग चाहूंगा। (ाोर एवं व्यवधान)

श्री अध्यक्षः वह तो मैं पहले ही बात चुका हूं कि Lobby is also just a part of the House. बाहर परसिफैट्स में लाईब्रेरी में, सी०ए०टी०ए० ब्रांच में और दूसरी जगहों पर वे आ सकते हैं लेकिन आ कर नारेबाजी करें मिसबिहेव करें, तो ठीक नहीं हैं।

चौधरी वीरेन्द्र सिंहः स्पीकर साहब, उनको धक्का दे करके बाहर निकाला गया। (ाोर)

श्री बंसी लालः अध्यक्ष महोदय, आप वाच एण्ड वार्ड वाली को कह दें कि उनको अन्दर आने दो। यह एक सही बात होगी। इसमें जमानत की कोई जरूरत नहीं है। (विघ्न) स्पीकर साहब, वे इनसे ज्यादा रिस्पैक्टेबल आदमी हैं। आप यह नहीं कह सकते कि वे जमानत दें। वे आपके रहम पर नहीं आये। वे अपनी हिम्मत से यहां पर आये है। (ाोर एंव व्यवधान) स्पीकर साहब, आप वाच एण्ड वार्ड वाले स्टाफ को कहलवाओ कि वे उनको अन्दर आने दें। नहीं तो फिर हमार भी यहां पर बैठने का कोई फायदा नहीं है। (ाोर एवं व्यवधान)

श्री अध्यक्षः वे अन्दर जाकर फिर गड़बड़ करते है नारेबाजी करते है या फिर उसी ढंग का मिसबिहेव करते है तो फिर आपका क्या स्टैंड होगा?

श्री बंसी लालः स्पीकर साहब, इस बात की कोई गारंटी नहीं ले सकता कि वे यहां पर आ कर क्या करते है। (ाोर एंव व्यवधान) स्पीकर साहब अगर आप उनको यहां सदन की बिल्डिंग मैं आने की इजाजत नहीं देते तो हमारे यहां पर बैठने का कोई फायदा नहीं है। इस एज ए प्रोटेस्ट वाक आउट करते है।

श्री अध्यक्षः वह तो मैंने कह दिया है कि वे विधान सभा की बिल्डिंग में आ सकते हैं। (Interruptions) I have already said that they can come.

(इस समय श्री बंसी लाल व हरियाणा विकास पार्टी के उपस्थित सदस्य तथा जनता दल पार्टी के श्री वीरेन्द्र सिंह और श्रीमती चन्द्रावती सदन से वाक आउट कर गए)

ध्यानाकर्शण सूचना–

Mr. Speaker: Hon'ble members, I have received a notice of calling attention motion no. 4 from Sarvshri Bansi Lal, Karan Singh Dalal, Amar Singh, Chhatar Singh, Pal Singh, Smt. Chadravati, Sarvshri Lehri Singh and Amar Singh Dhanday M.L.As, As, regarding the breaking of the statue of the framer of Indian Constitution, the Bharat Rattan, Dr. Bhim Rao Ambedkar. I admit it. Chaudhari Bansi Lal may read his motion.

(The motion was not read out as Shri bansi Lal and other members, who had given notice were not present in the House.)

भौक्षणिक वर्श 1992–93 से राज्य की सभी भौक्षिणक संस्थाओं में पंजाबी को दूसरी भाशा के रूप में आरम्भ करने संबंधी

Mr. Speaker: Hon'ble members, Shri Phool Chand Mullana has been authorised by Shri Jai Parkash to move the resolution on his behalf, Shri Mullana may now move it.

Chaudhry Phool Chand Mullana: Speaker Sir, I move that-

"With a view to meet the long outstanding demand of a large section of the population of the Stat, this House recommends to the State government to introduce Punajabi in Gurmukhi Script as one of the 2nd Languages in all Educational Institutions in the State from the academic year 1992-93.

Mr. Speaker: Motion moved that-

With a view to meet the long outstanding demand of a large section of the population of the State, this Hous recommendations to the State the 2nd Language in all Educational Institutions in the State from the academic year 1992-93.

चौधरी फूल चन्द मुलाना (मुलाना अनुसूचित जाति): आदरनीय अध्यक्ष महोदय, 15 अगस्त 1947 को भारत अंग्रेजो के चुंगल से आजाद हुआ और आजादी के बाद कुछ दे ा विरोधी ताकतें चाहती थीं कि भारतवर्श मजबूत न हो। इस दे ा का धर्म

के नाम पर बंटवारा हुआ और धर्म के नाम पर बंटवार होने के प चात् जो क्षेत्र पंजाब से पाकिस्तान में गया, उस क्षेत्र से बहुत सारे लोग भारतवर्श के कई भागों में सैटल हुए जिनमें से मौजूदा हरियाणा भी है। उस पंजाबी क्षेत्र के लोग चण्डीगढ़, हरियाणा, हिमाचल और दिल्ली में अपनी करोड़ो रूपये की जायदाद छोड़ कर अपने कारोबार छोड़ कर विस्थापित हो कर आए। लेकिन अध्यक्ष महोदय, उनकी भावना हमे ाा से रही कि वे जिस पंजाब क्षेत्र से आए है जहां वे जिस भाशा में खुद को अभिव्यक्त करते थे, वहां पंजाबी भाशा स्कूलों में सैकण्ड लेंग्वेज के रूप में पढ़ाई जाए और उन्हे अधिकार दिया जाएं कि कालेजों और महाविद्यालयों में वे पंजाबी को दूसरी भाशा के रूप में पढ़ सकें और अपनी अभिव्यक्ति पंजाबी में कर सकें। हरियाणा नवम्बर, 1966 में अस्तिव में आया और हरियाणा बनने के बाद सारे मसले आज तक ज्यों के त्यों बने हुए है। इस सरकार से पहले जो भाई सत्ता में आए, वे कहते रहें कि हम नहर बनवाएंगे और दोस्ती उनसे करते रहे जो कहते है कि नहर हटवाएंगे। **(स समय उपाध्यक्ष महोदय पदासीन हूए)** उपाध्यक्ष महोदय, एक भी काम नहीं किया, एक भी भाब्द इन्होने हरियाणा के हित में नहीं कहा। आज इस सदन मेें जो रेजोल्यू ान लाया गया कि पंजाबी भाश को स्कूलों और कालेजों में दूसरे दर्जे की भाशा का स्थान दिया जाए, उसको स्कूलों में पढ़ाया जाए, इसके पीछे भी एक इतिहास हैं इससे बहुत से लोगों की भावनाएं जुड़ी हुई हैं। हम सद्भावना पैदा करना चाहते है। उपाध्यक्ष महोदय, इस प्रान्त के सभी

वासियों से, सभी भाईयों से मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि पिछले दिनों इस राज्य मैं ऐसा नेतृत्व रहा है जो खुलेआम, खुले मंच से हमारे पंजाबी भाईयों को हमारे व्यापारी भाईयों को गाालियां देता रहा और यहां तक कहा गया कि इन लोगों को वोट डालने का अधिकार भी नहीं होना चाहिए। यहां तक भी कहा गया कि इन लोगों को हरियाणा में रहने का भी अधिकार नहीं है। लेकिन मौजूदा सरकार के मुखिया सदन के नेता जो कि फराख दिल है, सब धर्मो को साथ ले कर चलते है सब महजबों को साथ लेकर चलते है जाति पाति में वि वास नहीं रखते है, उसी भावना को रखते हुए हम सदन में यह रैजोल्यू ान ला रहे है। आज राज्य में लगभग 20 प्रति ात ऐसे लोग है जो उस पंजाबी क्षेत्र के रूप में आज भी कुछ स्कूलों में 58–59 हजार के करीब बच्चे पंजाबी भाशा पढते है और उनको पढ़ाने का प्रबन्ध सरकार की और से है। कोई 565 के करीब तेलगू भाशा पढ़ाते है और 4–5 कालेजों में पंजाबी पढ़ाने का प्रावधान है। लेकिन मैं समझता हूं कि ये लोग, जो पंजाब से आए है, जिनकी जनसंख्या 20 प्रति ात से अधिक है और वे भाई, जो गुरूओं को मानते है, जो सिक्ख महजब में वि वास रखते हैं, वे मानते है कि पंजाबी भाशा मैं है। मेरे कहने का मतलब यह है कि इसी लिए उनका मोह पंजाबी भाशा में है। मेरे कहने का मतलब यह है कि काफी भाईयों का पंजाबी से मोह है। मेरे कहने का मतलब यह है कि काफी भाईयों का पंजाबी से मोह है। तो उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए हम इस सदन में यह रैजोल्यू ान लाए है कि पंजाबी भाशा

की हरियाणा में बढ़ावा दिया जाए। जिससे हम इसका दर्जा बढ़ा सके। प्रांत में सदभावना का माहौल इस मौजूदा सरकार के आने के बाद आया है। जाति–पाति का भेद–भाव घटा है और मजहबी बातें दूर हुई है। इसलिए पंजाबी की भाशा प्रेम रखने वालों के मन में वि वास पैदा करने के लिए, उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह सिफारि ा करूंगा कि इन सब भावनाओं को ध्यान में रखते हूए विधान सभा तमे मैने जो रैजोल्यू ान पढ़ा है, उसके तहत राज्य में सभी भौक्षणिक संस्थाओं में गुरूमुखी लिपी में पंजाबी भाशा को दूसरी भाशा के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए जिससे हमारे उन भाइयों में, जिनमें वि वास की भावना जगी है, उनमें और भावना जागे। जो हमारे पड़ोसी है उनका यह कलेम है कि हरियाणा में जो पंजाबी भाशा क्षेत्र है उन को पंजाब में बदल दिया जाए। मैं पूछता हूं कि क्यों बदल दिया जाए? हम चाहते है कि यहां भी सद्भावना का वातावरण पैदा हो। जिससे लोग ऐसा सोचना ही बन्द कर दें। हर क्षेत्र में बंगाली बोलने वाला हो सकता है, अग्रेंजी बोलने वाला हो सकता है और अन्य भाशा बोलने वाला हो सकता हैं। हमारे क्षेत्र में जो पंजाबी बोलने वाले भाई है, उनकी भावनाओं का आदर क्यों न किया जाए? इस लिए सरकार से मैं यह पुरजोर सिफारि ा करता हूं कि इस वर्श हमारे राज्य की सभी भौक्षणिक संस्थाओं में गुरूमुखी लिपि पंजाबी की दूसरी भाशा के रूप में आरम्भ किया जाए। धन्यावाद ।

श्री अमीर चन्द मक्कड़ (हांसी): उपाध्यक्ष महोदय, अभी मौलाना साहब ने जो प्रस्ताव रखा है मै उसका समर्थन करता हूं। उपाध्यक्ष महोदय, कौम उन्नति तभी करती है जब उनके बच्चों को उनकी भाशा में पढ़ने का मौमा दिया जाए। वैसे भी आप जानते है कि हरियाणा बनने के बाद, उस पंजाब से, जिस पंजाब का नाम हमे ाा ही आजादी के इतिहास में सबसे अग्रणी रहा है, उस पंजाब की धरती से पैदा हुए नौजवानों ने जंगेआजादी में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया है। इस पंजाब के लोगों ने हमे ाा ही दे ा की उन्नति करने मे बहुत पार्ट अदा किया। परंतु पंजाब के दो हिस्से हुए, हरियाणा अलग बना और पंजाब का कुछ हिस्सा हिमाचल में भी गया। जितने भी पंजाबी बोलने वाले भाई हरियाणा में आकर बसे, ये सारे पहले पंजाबी ही थे। क्योंकि हरियाणा पंजाब का ही एक हिस्सा था। पहले हरियाणा भी पंजाब ही था। हम सभी पंजाबी थे। कोई हरियाणवी नहीं था, कोई पंजाबी नहीं था। सन्1966 से पहले कुछ हालात ऐसे बने जिनके कारण पंजाब से अलग होकर हरियाणा बना। यह भी ठीक ही हुआ क्योंकि हरियाणा में अपनी अलग सरकार बनी और हरियाणा ने काफी उन्नति की। जहां पहले अनाज बहूत कम पैदा होता था, वहों आज एक करोड़ टन से भी ज्यादा अनाज पैदा होने लगा है। यह सब हमारे किसानों की देन है जिसके कारण हरियाणा इतनी उन्नति कर सका। मैं इनको बतलाना चाहता हूं कि इन्होनें कुर्सी हथियाने के लिए लोगों को आपस में लड़ाया तथा जात पात का नारा लगााकर लोगों को बांटने का प्रयास किया। उनका केवल एक ही

ध्येय रहा है कि इलैक ान आते है, ऐसी ही बातें करते है। मैं भी उनके साथ रहा हूं इसलिए मुझे पता है, वह यह कहा करते थे कि काम करने की कोई जरूरत नहीं है, अगर वोट लेकर एम०एल०ए० बनना है तो लोगों को आपस में लड़ाये रखो। वह यह कहते थे कि जब भी इलैक ान आयें, इन बातों का जरूर ध्यान रखो एम०एल०ए० बन जाओगे। पिछले चार सालों का पीरियड बताता है कि इनके बड़े नेताओं ने जलसों में कहा कि पंजाबियों को यहां से निकाल दो, पंजाबी लुटेरे हैं। उनको यह अकल नहीं थी कि पंजाबी वर्ग वह वर्ग है जिन्होंने भारत की आजादी के लिए कितनी कुर्बानियां दी है और हरियाणा बनने के बाद हरियाणा की उन्नति में इसी वर्ग का सबसे बड़ा योगदान रहा है। चाहे वह खेती में हो यह पढ़ाई लिखाई में हो या किसी और वर्ग में हो। खेती मे नये नये तरीके अपनाकर इस वर्ग ने काफी उन्नति कीं

Mr. Deputy Speaker: Hon. Members, there has been constant cross talks between the members and almost on each table. Let there be no interuptions please.

श्री अमीर चन्द मक्कड़: डिप्टी स्पीकर साहब, मंत्रियों को बोलने की इजाजत हे इनको न टोकें। वे अपनी बातों में लगे हुए है। मैं उन नेताओं के बारे में कह रहा था जो ऐसी बात करके उस वर्ग की बेज्जती करते है। कभी कहते है कि बनियों को वोट देने का हक नहीं देना चाहिए। कभी कहते है पंजाबियों को वोट देने का हक नहीं देना चाहिए। डिप्टी स्पीकर साहब, जब सभी कुछ भाई – चारे से चल रहा है तो उनमें आपस में दरार न

डाली जाये और आपस में इकट्ठे रहने दिया जायें जो लोग इस किस्म के नारे देते आ रहे है, कालिंग अटें ान मो ान देते आ रहे है, एस.वाई.एल. कैनाल के लिए आज इस्तीफे देने तक की धमकी देते आ रहे हैं, वह पिछले चार साल से क्या करते रहे। वे मिनिस्टर भी रहे, चीफ मिनिस्टर भी रहे और उप प्रधानंमत्री भी रहे तथा हरियाणा और केन्द्र में भी इनकी ही सरकार रही तो वे हरियाणा के हितों के लिए क्या करते रहे कभी इन्होंने इस प्रकार की धमकी नहीं दी कि सैंटर ने अगर एस.वाई.एल. का पानी हरियाणा को नहीं दिया तो हम मिनिस्ट्री छोड़ देंगें हम इस्तीफा दे देंगे। लेकिन आज अखबारों में अपना नाम छपवाने के लिये इस किस्म की बातें करकें लोगों का ध्यान अपनी और खींचने की कोि ा ा कर रहे है। यह सिर्फ कहने का इस्तीफा देने की बात कह रहे हैं। 1984–85 में इन्होनें इस्तीफे दिये थे। जब हरियाणा की भोली जनता इनकी बातों में आ गयी, जनता इनके धोखे मे आ गयी अब फिर वह समझते है कि हम अगर इस्तीफे देंगे तो हम जनता में भाहीद होकर निकलेंगे। लेकिन हरियाणा की जनता सभी बातों को जानती हैं मैं हरियाणा की जनता को यह बता देना चाहता हूं कि वह इनके राज के दौरान हुए कामों को देखें। इनके पिछले 4 सालों के राज में क्या डिवैल्पमैंट हुई है। इस बात को देखें केवल चौपालों में 20 मूढ़े रख दिये, हुक्का रख दिया और थोड़ा सा तम्बाकू रख दिया, और इनके अलावा किसानों की कोई सेवा नहीं की। इसके अलावा और कोई काम नहीं हुए है यह बात सारे हरियाणोके लोग जानते है। हरियाणा में जब कभी चौधरी

भजन लाल जी नेता हुए तभी हरियाणा में काम भुरू हाते रहे। आज सारे हरियाणा में तरक्की के काम भुरू हो रहे हैं, चारों तरफ तरक्की हो रही है। मैं यह समझता हूं कि इनके हाथ में कोई जादू हैं। पता नहीं क्या जादू है। जब भी कांग्रेस सरकार सत्ता में आती है तब भुरू में ही चारों तरफ काम होने भुरू हो जाते है। जब उन लोगों के हाथ से सत्ता आती है सब काम लुप्त हो जाते है, प्रदे ा के लोगों को आपस में लड़ना, देहातियों और भाहरियों को लड़ाना, कहीं किसी को लूटना, यही काम इन्होनें पिछले चार सालों में किया। इस तरह के इन्होंने कितने ही काम किये है। गुन्डों से रोहतक में हमारी बेटियों को नंगा करके उनकी बेइज्जती करायी उनके खिलाफ आज तक भी कोई मुकदमा दर्ज नहीं किया गया है। कितने ही ऐसे कांड सारे हरियाणा में हुए हैं आज यह लोग इस्तीफा देकर कोई उपलब्धि हासिल करना चाहते है लेकिन मैं हरियाणा की जनता को बधाई दूंगा कि वह बधाई पात्र है कि उसने ऐसे नेता से हमारा पीछा छुड़ाने की कोि ा ा की है। उनके विधन सभा में या पार्लियामैंट में कहीं नहीं भेजा है, यह फैसला जनता ने दिया है औ इसके लिये हमारे चौधरी छतरपाल सिंह जी भी बधाई के पात्र है कि उन्होनें चौटाला में उनको घर भेज दिया, उनको विधान सभा में भी नहीं आने दिया। उनकी पार्टी केजो कुछ भाई यहां पर चुनकर आयें हैं, उन्होंने जिस किस्म का ड्रामा यहां पर किया है ओर जिस किस्म का इन–डिसिप्लन हाउस में किया है, वह हरियाणा की सारी जनता जानती है और उसने देख भी है। मै एक और बात कहना चाहता

हूं कि जो भाई पंजाब छोड़ कर हरियाणा में आए हुए है, वह सब हरियाणवी है, हमें इस बात का फख्र है कि हम सभी हरियाणवी हैं लेकिन भाशा के बारें में जो प्रस्ताव चौधरी फूल चन्द जी ने रखा है, मैं उस बारें में कुछ कहना चाहता हूं। डाक्टर लोहिया के साथ काफी समय तक हमने मिल का काम किया है। वह हमे ाा से ही इस बात की लड़ाई लड़ते रहे कि आज जो दे ा या कौम कभी आगे नहीं बढ़ सकती। उनके अंग्रेजी के बारे में जो विचार थे, वह सब को पता ही होगा। मैं यह जरूर प्रार्थना करूंगा कि जैसे पंजाबी पंजाब की भाशा है वैसे दूसरे प्रान्तों की भी अपनी भाशा है लेकिन हिन्दी को भी कुछ थोड़ा–बहूत इन्सैंटिव देना चाहिए ताकि हिन्दी हमारी राश्ट्र भाशा बन सके। हमने सारा काम हिन्दी में करना भाुरू कर दिया है। डाक्टर लोहिया यह कहा करते थे कि जो अंग्रेजी बोलने वाला एक बाबू है, वह आम जनता में अफसर इसलिए बन कर चलता है क्योंकि वह अंग्रेजी के दो लफ्ज बोल सकता है। आम आदमी उससे बात करता हुआ घबराता है क्योंकि उसको अंग्रेजी का ज्ञान नहीं होता। इसलिए यह बात भी की गई की अंग्रेजी की जगह हिन्दी में काम–काज चलाया जाये, उसके लिये कितनी ही एजीटे ान्ज भी चलीं। डाक्टर लोहिया साहब का यह राश्ट्र भाशा हिनदी का विकास हो सकता है। भारत के गरीब आदमी या एक मजदूर के बारें में उनका कहना था कि कोई गरीब आदमी जब कभी कोई मुकदमा करता है तो वकील लोग अंग्रेजी में बहस करते है। वह बहस उस गरीब किसान की समझ में नहीं आती कि वकील क्या बोल रहा है। उसके खिलाफ

बोल रहा है या उसके फेवर में बोल रहा है। अगर हिन्दी में बहस चलें तो एक एक तो उसको अपनी भाशा होने की वजह से सारी बात समझ में आ जाएगी और दूसरे वह इस बारे में ज्ञान भी हासिल कर लेगा। हमारा दे ा विभिन्न बोलियों का दे ा है। इतनी भाशाएं होते हुए भी हम एक है। जिस स्टेट में जायें, लोग अलग–अलग भाशाएं बोलते हैं। पंजाब में जायें तो पंजाबी बोलते है, तमिल में जायें तो लोग तामिल बोलते है। लेकिन राश्ट्र भाशा हिन्दी का विकास जरूर होना चाहियें उनका विचार यह था कि मुकदमों की कार्यवाही भी हिन्दी में होनी चाहिए ताकि वह आदमी अपने मुकदमें की पैरवी खुद कर सके। वह गरीब आदमी तीन बार कचहरी में मुकदमा लेकर के जाएगा तो चौथी बार अपने मुकदमें की बहस खुद कर सकेगा। इससे वकीलों को देने वाला उसका खर्चा भी बच पाएगा। इसलिये सभी जगहों पर काम काज हिन्दी भाशा में ही होना चाहिये तककि लोंगो को किसी के ऊपर निर्भर न करना पड़े बड़ी आसानी से अपनी बात कह सके और समझ भी सकें। यह एक अच्छाा प्रस्ताव है जो श्री फूलचंद जी मुलाना ने इस हाउस में रखा है। मैं इसकी पूरी हिमायत करता हूं कि हरियाणा के अन्दर पंजाबियों की आबादी लगभगा 25 से 28 परसैन्ट तक ही है, उसको मद्देनजर रखते हुए हरियाणा के अन्दर तेलगू भाशा की जगह पंजाबी भाशा को दूसरी की जगह पंजाबी भाशा को दूसरी भाशा का दर्जा दिया जाना चाहिये। मझे तेलगू से कोई नफरत नहीं है वह भी हमारे बच्चे पढ़ें ताकि जब उनकी

स्टेट में जाएं तो हमारे बच्चें वहां के लोगों के साथ बातचीत कर सकें और उनकी समझ सकें।

उपाध्यक्ष महोदय, आप अच्छी प्रकार से जानते है कि आज पंजाब के क्या हालात हो रहें है। लोग पंजाब को जला रहे है और इसी किस्म के नारे हरियाणा के अन्दर लगााये जा रहे हैं और लोंगो को बहकाया जा रहा है। पंजाब को जलाने वाले दे द्रोही लोग, आज हरियाणा के अन्दर भी इसी तरह का उपद्रव मचाने की भरसक कोि ा ा कर रहें है और यहां के पंजाबी भाइयों को कह रहे हैं कि क्या तुम्हारे बच्चे यहां पर सुरक्षित है। क्या तुम्हारे बच्चें यहां पर गुरूमुखी पढ़ सकते? क्या तुम्हारे बच्चे यहां पर सुरक्षित है। क्या तुम्हारे बच्चें यहां पर गुरूमुखी पढ़ने की सहूलियत है? इस तरह की भड़काने वाली बातें वे लोग कर रहे है। मैं समझता हू कि अगर पंजाबी हरियाणा के अन्दर दूसरी भाशा के तौर पर लागू कर दिया जाए तो ऐसे लोगों को अपने आप ही उनकी बात का जवाब मिल जाएगा। मैं इतना कहना चाहता हूं कि उनके बच्चें और हमारे बच्चे हमे ाा अपने अपने घरों के अन्दर गुरू ग्रंथ साहब का पाठ करते है जो गुरूमुखी लिपि में है और आप सभ जानते है कि गुरू ग्रंथ साहब के रचने वाले, लिखने वाले, गुरू साहेबान है जिन्होने गुरूमुखी को भाशा बनाकर दे ा की उस वक्त की जालिम सरकार के खिलाफ हमे ाा लड़ाई लड़कर भाहादत पाई यह गुरू तेग बहादूर ही थे जिन्होंने क मीर के जुल्म को देखकर कहा था कि दे ा कुरबानी मांगता

है ओर उनके बेटे गुरू गोबिन्द सिहं जी ने कहा कि पिता जी आज आपसे बढ़कर कौन ऐसा हो सकता हैं जो दे ा के लिये कुरबानी दे सके। कितना बड़ा हौंसला था उस छोटे बच्चे का जिसने पिता से कहा कि आप से बड़ कर कौन हो सकता है जोकि दे ा के लिये कुर्बानी दे सके। तभी उन्होनें क मीर से चलकर दिल्ली में गुरूद्वारा भी ागन्ज में भाहादत दी थी। आज उनकी बनायी हुई जो लिपि है, उसको लागू करने में हमें कोई झिझक नहीं होनीं चाहियें। उसको लागू करने का श्रेय हमारी इस पापुलर सरकार व इस प्रस्ताव के मूबर व इस हाउस को मिलना चाहिये। इसलिए मेरी सरकार से प्रार्थना है कि हमें भी उन भाहीदों की याद में इस प्रस्ताव को पास करके गुरूमुखी लिपि को हरियाणा के अन्दर दूसरी भाशा के तौर पर लागू करना चाहिए। इन भाब्दों के साथ मैं आपका धन्यावाद करता हुआ अपना स्थान लेता हूं । जय हिन्द।

लोक सम्पर्क राज्य मंत्री (श्री सुरेन्द्र मदान): उपाध्यक्ष महोदय, आज सदन में श्री फूलचन्द जी मुलाना ने जो प्रस्ताव रखा है, वह वास्तव में श्री जय प्रका ा जी ने रखना था लेकिन उनके स्थान पर अब इन्होंने इस प्रस्ताव को विचार के लिए यहां प्रस्तुत किया है, जिसका मैं समर्थन करने के लिए खड़ा हूआ हूं । उपाध्यक्ष महोदय, 1947में पंजाबी पाकिस्तान को छोड़कर हिन्दूस्तान में आए थे और इस पूरे नोर्थ रीजन, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदे ा और दिल्ली में जहां भी बसे, वहां डिवैल्पमैंट ओर

विकास का नया ध्येय हम लोगों ने बनाया। लेकिन अफसोस की बात है कि जब 1966 में पंजाब और हरियाणा अलग–अलग बने तो इन पंजाबियों के लिए उस वक्त भी हरियाणा के अन्दर पंजाबी को दूसरी भाशा बनाया जाना जरूरी था लेकिन उस वक्त बनाई नहीं गई। आज यह संकल्प रखा गया जिसके लिए मैं चौधरी फूलचन्द मुलाना का धन्यावाद करता हूं जिन्होंने यह रैजोल्यू ान रखा है। उपाध्यक्ष महोदय, आपको पता ही है कि पिछले चार साल, जब इस प्रदे ा में जनता दल और लोक दल की सरकार रही, उस समय इस कम्यूनिटी के लोगों के साथ किस प्रकार का भेद भाव था, यह हम सीाी जानते है। हमारी 35 प्रति ात आबादी होते हुए भी हम लोगों के साथ किस प्रकार का भेद भाव किया गया। उस समय हमारा केवल एक मंत्री उस सरकार मैं लिया गया। उस समय हमार केवल एक मंत्री उस सरकार में लिया गया। इतना ही नहीं इनके खिलाफ जहर उगला गया कि पंजाबी लुटेरे हैं, पाकिस्तानियों वापिस जाओ। इस प्रकार के पोस्टर सारे हरियाणा के अन्दर निकाले गए। निरा ाा की लहर इस जाति के अन्दर रही। मैं उस वक्त उसी सरकारी पार्टी में था और विधायक था। मेंने उस वक्त नान आफिसियल रैजोल्यू ान रखा था। चौधरी बीरेन्द्र सिं जी इस सदन को छोड़ कर चले गए हैं, वे उस समय पार्लियामैंटरी अफेयर्ज मिनिस्टर हुआ करते थे । आज वे सदन में होते तो मैं उनसे पूछता । उन्हें मालूम था कि यह रैजोल्यू न आने वाल है इसलिए जान बूझ कर चले गए। चौधरी बंसी लाल जी भी सदन को छोड़ कर चले गए है। जबकि उनको कोई इतान

अहम कार्य नहीं था। जब चौधरी बंसी लाल चीफ मिनिस्टर थे, तो उन्होंने हरियाणा के अन्दर तेलगु को दूसरी भाशा का दर्जा दिया था। पिछले सै ान में चौधरी भजन लाल जी ने उनको कहा था कि चौधरी बंसी लाल जी आपने हरियाणा के अन्दर तेलगु को दूसरी भाशा बनाया था। आज चौधरी बंसी लाल जी सदन छोड़ कर चले गए है जब यह रैजोल्यू ान सदन में आया है। वे आम जलसों में बोलते है तो पंजाबियों की तारीफ के बड़े बड़े पुल बांधते है। वे कहते हैं कि यह बड़ी बहादुर कोम है और इन लोगों ने अपना कल्चर नहीं छोड़ा लेकिन अपनी सम्पति छोड़ दी। अगर आज वे सदन में मौजूद होते तो उनको आज विधान सभा के अन्दर बोलना चाहिए था और कहना चाहिए था कि पंजाबी को दूसरी भाशा बनाया जाए। मैं कह रहा था कि उस वक्त मैंने इस संबध में एक रैजोल्यू ान दिया था। पहले तो मुझे चौधरी वीरेन्द्र सिंह ने मना किया, फिर तत्कालीन मुख्य मन्त्री श्री चौटाला ने कहा कि आप इसको वापिस लीजिए। मैंने कहा कि मैं वापिस नहीं लूंगाा क्योंकि यह लोगों की मांग है। आज इन लोगों में निरा ाा है। आज अगर आप इन लोगों के जख्मों पर मरहम लगाना चाहते है तो ऐसा करना जरूरी है कि पंजाबी को दूसरी भाशा का दर्जा दिया जाए। उस वक्त के मुख्य मंत्री ने मुझे बुलाया और कहा कि पार्टी के डिसिप्लन का मामला है और मैं सदन का नेता होन के नाते आपको आदे ा देता हूं कि आप इस रैजोल्यू ान को वापिस ले लें। तो मुझे मजबूरी में यह रैजोल्यू ान वापिस लेना पड़ा। उनके बाद मैनें कई पत्र लिखे कि नि लोगों ने पंजाबियों के

खिलाफ पोस्टर निकाले थे, उन लोगों के खिलाफ कार्यवाही की जाए। पोस्टर्ज में उन लोगों के अते पते भी थे लेकिन किसी के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं की गई। इस जाति के लोगों के साथ उन लोगों की यह हमदर्दी थी। उस समय चौधरी भजन लाल जी केन्द्र में मंत्री थे। उन्होनें करनाल में एक पंजाबी सम्मेलन करके पंजाबियों को सहारा दिया था। उन्होनें करनाल में एक पंजाबी सम्मेलन करके पंजाबियों के जख्मों पर महरम लगाई थी। आज उन्हीं की सरकार है और उन्हीं के कार्यकाल में आज यह रेजोल्यू ान पास होगा। मुझे पूरी उम्मीद है कि हरियाणा प्रदे ा में पंजाबी दूसरी लैंग्वेज बनेगी। अंत में मैं इस वि वास के साथ अपना स्थान लेता हूं कि हाउस में जो मेरे दूसरे साथी हैं, वे भी इस रैजोल्यू ान का समर्थन करेंगे।

जन स्वास्थ्य मंत्री (चौधरी जगदी ा नेहरा): उपाध्यक्ष माहेदय, श्री फूलचन्द मुलाना जी की तरफ से जो ना ओफि ियल रैजोल्यू ान आया है कि हरियाणा के स्कूल और कालेजों में पंजाबी भाशा को दूसरी भाशा के तौर पर पढ़ाया जाए, मैं उसके समर्थन मैं बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। उपाध्यक्ष महोदय, जो पंजाबी भाशा है यह मेरे विचार में सारी दूनिया में बोली जाने वाल भाशा है। हमारे पंजाबी भाई कनेडा, अमेरिका और दे ा में, प्रांत में रहते है और वह पंजाबी बोलते है। पंजाबी भाशा जो कि पाकिस्तान और हिन्दूस्तान के बहुत बड़े सूबे की भाशा थी जिस सूबे के 16 जिले पाकिस्तान

मैं रह गये और 13 जिले हिन्दुस्तान में आ गए। जो पाकिस्तान में 16 जिले रह गए हमारे बंटवारे के बाद उन 16 जिलों के बहूत से पंजाबी भाई सारे उत्तरी भारत में फैल गए और इसी तरह से बहुत से पंजाबी बोलने वाले मुसलमान भाई पाकिस्तान के पंजाब जिले में चले गए। पंजाबी भाशा हमारे बहुत से प्रांतो में बोली जाती है लेकिन उसको एक बहुत छोटा रूप दिया गया। अकालियों का जो रवैया था, उन्होनें इसको धर्म के साथ जोड़ दिया। पंजाबी भाशा को बहूत छोटा रूप दिया गया। अकालियों का जो रवैया था, उन्होनें इसको धर्म के साथ जोड़ दिया। पंजाबी बहुत पवित्र भाशा है गुरूओं के मुख से निकली हुई भाशा हैं। आज का जो रैजोल्यू ान है, वह यह है कि भौक्षणिक संस्थाओं में गुरूमुखी लिपि में पंजाबी को दूसरी भाशा के रूप में पढ़ाया जाए ताकि वास्तव में लोगों को यह पता लगे कि गुरूओं के मुख से इस संसार के लिए उस समय के हालात को देखते हुए, क्या क्या बातें कहीं गई थी। लेकिन इस भाशा को लोगों ने अपने स्वार्थ के लिए बहूत छोटा कर दिया। पंजाबी भाशा को छोटा करने में अकालियों और बी०जे०पी०, जो पहले जनसंघ थी, उन दोनों का हाथ है। पंजाबी को इतनी बड़ी भाशा होते हुये छोटा कर दिया गया। हिन्दुस्तान पाकिस्तान में पंजाबी भाशा बंट गई और फिर हिन्दुस्तान में पंजाब बना तो फिर पंजाबी भाशा बंट गई क्योंकि हरियाणा और पंजाब दो सूबे बन गए। इसके लिए बी०जे०पी० और जनसंघ के भाई जिम्मेदार है क्योंकि वे पंजाबी बोलते हुए भी पंजाबी नहीं लिखते, हिन्दी लिखते है। अकाली हिंदी बोलते हुए

पंजाबी लिखते है। अगर पंजाबी भाशा को पंजाबी भाशा के रूप में ही देखा जात और इसको राजनीतिक रंग न दिया जात तथा धर्म के साथ न जोड़ा जाता तो आज पंजाब और हरियाणा में यह हालात पैदा नह होतें जब 1985–86 में भाशा के नाम पर पंजाब और हरियाणा का झगड़ा हुआ तो उस समय कन्डूखेड़ा में मेरी ड्यूटी लगाई गई थी। उस समय मैंने एक पंजाबी भाई से यह कहा था कि यह भाशा का झगड़ा नहीं है, यह तो भाशा के नाम पर बिरादरी को जोड़ दिया गया है। उस समय श्री हनुमान बि नोई कन्डूखेड़ा के सरपंच थे और वहां पर उस समय भाई भामेन्द्र सिंह एम०पी० भी मौजूद थे। मैंने दोनो को बुलाकर यह पूछा कि क्या आप दोनों पंजाबी नहीं बोलते तो उन्होनें कहा कि पंजाबी बोलते है। फिर मैनें उनसे पूछा कि क्या आप पंजाबी भाशा नहीं समझते, उन्होनें कहा कि पंजाबी बोलते है। फिर मैंने उनसे पूछा कि क्या आप पंजाबी भाशा नहीं समझते, उन्होने कहा कि पंजाबी भाशा समझते हैं मैने उनसे पूछा कि फिर लह झगड़ा किस बात का है? आप इस तरह का झगड़ा क्यों कर रहे हे। कन्डूखेड़ा पंजाब में रहे या हरियाणा में रहे, इसमें आपको दिक्कत क्या है? उस समय भाशा के झगड़े का यह नतीजा निकला कि फरीदकोअ के एम० पी० क्या है? उस समय भाशा के झगड़े का यह नतीजा निकला कि फरीदकोट के एम०पी० श्री भामेन्द्र सिंह को उग्रवादियों ने मार दिया क्योंकि पंजाबी भाशा को राजनीतिक रूप दें दिया गया जोकि हमारे लिए बड़े दुख की बात है। आज हरियाणा के अन्दर काफी परसैन्ट लोग पंजाबी को बहुत अच्छी तरह से समझते

है। इसी तरह से पंजाब में जितने भी हिन्दू भाई हैं, चाहे वे अमृतसर में रहते हो, पूरी तरह से पंजाबी बोलते है और लिखते है। लेकिन जब सैंसिज होती है तो कहते है कि नहीं हमारी भाशा हिन्दी हे। जबकि वास्तविका यह है कि उनकी भाशा पंजाबी है। व पंजाबी भाशा बड़े अच्छे ढंग से बोल सकते हैं। इस भाशा को राजनीतिक रूप देना ठीक नहीं है। पंजाबी भाशा बहूत अच्छी और ऊंची भाशा है। हमारे जो गुरू हुए हैं उन्होने समाज के उत्थान के लिए यहां के मजलूम को ऊपर उठाने के लिए काम किये है। गुरू नानक तथा गुरू गोबिन्द सिंह जी ने समाज की बुराईयों को दूर करने के लिए बहुत काम किए है। मैं तो यह भी कहूंगा कि गुरू तेग बहादूर जी जी ने समाज के ही बली दी। गुरू तेग बहादुर अपने भाी ा की बली देने के लिए लाखन माजरा गांव तक गए थे, एक जलूस के रूप में जैसे आज कल राजनीतिक पार्टियों दिल्ली वोट क्लब पर जुलूस करने के लिए जाती हैं। जब वे अपने भाी ा की पार्टियां दिल्ली वोट क्लब पर जुलूस के रूप में जैसे आज कल राजनीतिक पार्टियां दिल्ली वोट क्लब पर जुलूस करने के लिए जाती है। जब वे अपने भाी ा की बली देने के लिए जा रहे थे तो उनको रास्ते में क ामीरी हिन्दू मिले। उन्होनें कह कि क्या हिन्दुओं की रक्षा हो सकती है? गुरू जी ने काह कि मैं अपन भाी ा देकर हिन्दुआ की रक्षा करूंगा और फिर उन्होंने अपना भाी ा हिन्दुओं की रक्षा के लिए दिया था गुरू गोबिन्द सिंह जी ने जालिम बाद ााहों से छुटकारा पाने के लिए अपने पिता जी का भाी ा दिया और अपने बच्चों को दीवारों में चिनवाया तथा

जालिम बद ाहों की आवाज के खिलाफ लड़ाई की। आज जो पंजाबी भाई, चाहे पंजाब में रहते है याह हरियाणा में रहते हैं, वे अपनी समस्या सुलझा सकते हैं। हमारा विरोध पंजाब के लोगों से या पंजाबी से नहीं होना चाहिए। लेकिन कुछ लोगों ने पंजाबी के नाम पर कहा कि पंजाबियों को और बनियों को वोट देने का अधिकार नहीं होना चाहिये। इस तरह कै लोगों ने ही आज तक एस० वाई० एल० नहर के झगड़े को नहीं निपटने दिया। वे समझते हैं कि अगर यह झगड़ा समाप्त हो गया तो उनकी चौधर खत्म हो जायेगी और वह चौधर आज के दिन खत्म हो चुकी है। वे इस तरह की बात करते है ताकि जो पढ़े लिखे लोग है और अनपढ़ लोग है वे आपस में लड़ते रहें। इन लोगों का बातचीत करने का तरीका और रहन सहन का तरीका और उनका स्टैण्डर्ड अलग है। हमें ऐसे लोगों से दूर रहना चाहिए जो वातावरण को खराब करना चाहते है। अगर हम ऐसे लोगों को खु ा करने के लिए इस तरह की भड़काउ बातें करते हैं जिससे सारे हरियाणा का जो माहौल है, वह हमे ाा के लिए दूशित हो जाए। पंजाबी भाशा केवल पंजाब के सिख भाईयों की ही भाशा को मानते है। वे पंजाबी जो सिख नहीं हैं, वे भी इस गुरूमुखी भाशा को मानते है। वे पंजाबी जो सिख नहीं है वे भी इस गुरूमुखी भाशा को मानते हैं। वे पंजाबी जो सिख नहीं है, गुरूद्वारों में जाते हैं, हम भी जाते है और माथा टेकते है जिससे मन को भाांति मिलती है। जेसा मैंने पहले काह हहै कि गुरू नानक देव जी ने समाज कि स्थिति जो बहुत नीचे चली गई थी, को सुधारा और उसी भाताब्दी

में कबीर जो भी हुए। उन्होनें भी लोगों को ऊपर उठाने के लिए अगुवाई की। मेरे कहने का मतलब यह है कि जो अधिकतर लोग हरियाणा में रहते हुए पंजाबी बोलते है, उनके लिए हरियाणा में तामिल की दूसरी भाशा बनाई जाए जबकि यहां पर कोई तामिल बोलता ही नहीं और न हीं बच्चे उसको पढ़ने वाले है। हां एक दो स्कूलों में तमिल पढ़ाई जा रही है ओर उसके लिए अध्यापक तमिलनाडू से मंगवाये हुए है दे ा के बड़े–बड़े भाहरों मे तामिल भाशा पढ़ाई जाती है जहां पर बहुत तमिल भाई रहते है लेकिन यहां पर उसका कोई तुक नहीं है। यहां पर कोई तमिल भाशा बोलने वाला नहीं हैं। इसलिए तमिल भाशा को सैकिण्ड भाशा रखना एक अच्छी बात नहीं है। लेकिन जहां पंजाबी काफी मात्रा में बोली जाती है उसको दूसरी भाशा बनाया जाना चाहिए। आज भी 10 बच्चे पंजाबी में पढ़ना चाहें उन्हे मास्टर उपलब्ध है। जब मैं ि ाक्षा मंत्री था तब भी यह बात थी कि और आज भी बहन भाान्ती राठी जी कह रही है। कि जहां से ये मांग आई कि दस बच्चे पंजाबी में पढ़ना चाहते है तो हम पंजाबी मास्टर वहां पर देते है। जितने भी बोर्डर के जिले है चाहे सिरसा है, हिसार है, करनाल है, कैथल है, अम्बाला है, यमुनानगर है यानि हरेक जिले मैं यह भाशा पढ़ाई जाती है और पढ़ाने का पूरा प्रबन्ध है। आज के माहौल में जहां पंजाब और हरियाणा में डिस्पयूट है, चाहे वह एस० वाई० एल० नहर के बारे में है, चाहे चण्डीगढ़ के बारे में है, चाहे फाजिल्का. अबोहर के बारे में है और चाहे पंजाबी–हिंन्दी गांवो के आदान–प्रदान के बारे में है, इन विवादों को सेटल करने

के साथ–साथ पंजाबी को दूसरी भाशा बनाने का फैसला भी सरकार को लेना चाहिए। मैं मुख्य मंत्री जी से दरख्वास्त करूंगा कि वे इस बारे में सोच–समझ कर फैसला लें और पंजाबी भाशा को जरूर दूसरी भाशा का दर्जा दिया जाए ताकि हमारा जो भाईचार है, पंजाबियों के साथ दोस्ती है, मिलन–वर्तन है, उसको हम ठीक ढंग से सुचारू रूप से बगैर किसी झिझक से बढावा दें ताकि पंजाबी भाशा को सैंकड लेंग्वेज का दर्जा दिया जा सके। उपाध्यक्ष महोदय, आखिर में गुरू नानक जी के भाब्दों को कहते हुए मैं अपना स्थान लूंगा और इस बात की जोरदार वकालत करता हूं कि पंजाबी को हरियाणा में सैकण्ड लैंग्वेज का दर्जा दिया जाए

''नाम खुमारी नानका, चढ़ी रहे दिन रात''

आबकारी तथा कराधान मंत्री (श्री ए०सी० चौधरी): डिप्टी स्पीकर साहब मैं आभारी हूं उन साथियों का जिन्होनें हरियाणा स्टेट के अन्दर रहने वाले 32 परसेंट लोगों के दिल की बात इस फलोर पर रखी। इस आ ायम के साथ कि हमारे समस्त सदस्यगण वक्त की आवाज को पहचानेंगे। खासतौर पर जब कि हमारी स्टेट बार–बार एक तथ्य को मानकर इसका उेलान करती आ रही है और माननीय मुख्य मंत्री जी ने बार–बार अपनी पब्लिक मीटिंगों से इस बात को माना और दोहराया है कि इस प्रदे ा का बंटवारा, ऐक ऐसा बंटवारा था जो बड़े और छोटे भाई का दर्जा अख्तियार कर चुका है। उस हालात में पंजाब को अगर

बड़ा भाई मान कर हरियाणा चलता है और पंजाब के लोग भी चाहते हैं कि हमारा आपसी कल्चरल रिले ान रहे, हमारा आदान प्रदान अच्छे तरीकें से रहें तो पंजाबी भाशा को सैकेन्ड दर्जा दे कर न सिर्फ हम अपने बड़े भाई या पंजाब प्रदे ा में रहने वाले लोगों की भावनाओं का आदर करके एक सौहार्दपूर्ण वातावरण की भाुरूआत करेंगे बल्कि इस प्रदे ा में रहने बल्कि इस प्रदे ा में रहने वाले वे लोग, जो माईग्रेट करके आए है, उनकी भावनाओं को भी आदर करेंगे। डिप्टी स्पीकर साहब, कुछ लोगों के दिमाग में एतराज हैं पागलपन है जो पंजाबी को किसी जात के नाम से कहते हैं। पंजाबी का अपना एक कल्चर है, पूरी तहजीब है, और गुरूमुखी उसकी एक लिपि है। हमारे अपने ग्रन्थ है और उस नाते से मैं एक बात कहूंगा कि 36 जातियों की नुमायन्दगी करती है पंजाबी जात। पंजाबी भाशा एक कोम और स्टेट की नुमायन्दगी करती है और एक स्टेट के नाम से जानी जाती हैं। हरियाणा का रहने वाला हरियाणवी है, बंगाल का बंगााली है, पंजाब का पंजाबी है, बिहार का बिहारी है। ठीक इसी तरीके से हरियाणा में रहने वाले व्यक्तियों का वह समाज जो 32 प्रति ात आबादी को पंजाबी कहता है, पहले वह हरियाणवी है। 1 नवम्बर 1966 को जब प्रदे ा का बंटवारा हुआ था, उससे पहले हम सब पंजाबी थी आज भले ऐडमिनिस्ट्रे ान प्वाइन्ट आफ व्यू से हमारा प्रदे ा दो हिस्सों में बंटा है लेकिन मैं तो यह कहूंगा कि पार्टि ान से पहले सुकहाट से लेकर होडल तक एक ही पंजाब हुआ करता था। बंटवारे के बाद पैप्सू बना, फिर कटा तो पंजाब बना और उसके बाद

हरियाणा बना। हमारी तहजीब एक है और तहजीब किसी एक जात की नहीं होती, किसी एक गौत की नहीं होती बल्कि सारे समुदाय की सारे दे ा की होती है। उससे जो भी ज्ञान अर्जित किया जा सके, उनको गुणवता में जो भी छिपा हुआ गुण और खजाना है, उस पर सारी मानवता का अधिकार है और उस नाते से अगर पंजाबी को सैकिण्ड लैंग्वेज का दर्जा दिया जाता है तो ऐसा करने से हम अपने प्रदे ा की बड़ी भारी सेवा करेंगे और अपने बच्चों को भी कहेंगे कि कौमी भाई–चारे का रूप देकर वे पंजाबी भाशा को सीखें। जिस तरह से अंग्रेजी भाशा को अपनाए हुए है। इसी तरह पंजाबी के गुणों को पंजाब के कल्चर का संस्कृति को और गुरूओं के आदे ा और निर्दे ाों को हम पूरी तरह समझकर अपने जीवन में एक नया मोड़ दे सकेंगें। कुछ लोगों ने पंजाबी को जाति भाशा के नाम से देखा। मै इसकी पुरजोर मुजम्मत करता हूं। मैं इस बात को सत्यापित करने के लिए खड़ा हुआ हूं कि कल्चर किसी एक व्यक्ति, एक ग्रुप किसी एक दायो में न समाकर एक समुन्द्र की तरह बड़ा है और किसी को इसे मिस–रिप्रैजैंट, मिस–इन्टरप्रेट करने का अधिकार नहीं है। इसी के साथ मै। एक बात कहूंगा कि पंजाबी वे है, जिन्हें सबसे पहले भारतीय होने का गौरव हासिल है। दे ा की आजदी के सन्दर्भ में, अगर इतिहास को दोहराएं तो लालाल लाजपतराय, भीदे आजम, मदन लाल ढिंगरा और बाकी ऐसे हजारों सूरमाओं के नाम हैं जिनके नाम से दे ा को कौना–कौना परिचित है। उन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर यह साबित किया है कि हम इसी प्रान्त के रहने वाले है।

प्रान्त के आधार पर चाहे कोई भी बोली बोलने वाले हों हम पहले हिंन्दूस्तानी है आज मैं पूरी जिम्मेवारी से कह सकता हूं कि हरियाणा में जितने भी लोग जो पाकिस्तान से आए है जिनमें में मैं खुद भी भाामिल हूं हम आज के दिन पहले हरियाणवी है, पहले भारतीय है और कल्चर के हिसाब से पंजाबी होने में हम गर्व महसूस करते है। उस नाते मैं यह बात कहे बगैर नहीं रहूंगा कि किसी को इस बात पर संदेह नहीं है कि ये लोग विस्थापित है, रफ्यूजी है, पनाहनसीन हैं। मैं एक बात उन लोगों के कान खोलने के कलए कहना चाहता हूं, जिन्होंने अपने सियासी उद् ाय के लिए और पंजाब के वहां बैठे हुए लोगों के हितों की रक्षा करने के लिए यहां रोज ड्रामेंबाजी की बात करते है। दूसरी तरफ उसी प्रका ा सिंह बादल की जाति, गोत के लोगौं को आज हरियाणा से बाहर निकालने की बात करते है। ऐसे दोहरे चरित्र के लोग हरियाणा के हितों की रक्षा नहीं कर सकते बल्कि हरियाणा का अहित ही कर रहे हैं उपाध्यक्ष महोदय, हरियाणा में बसे हुए जो लोग पंजाबी भाशा है उनमें से कुछ ऐसे भी हैं जो सच बोलने वाले हैं। लेकिन वे पंजाबी कल्चर से सम्बधिन्त है। मैं हरियाणा सरकार से और मुख्य मंत्री जी से हरियाणा विधान सभा में आज यह कहूंगा कि जो गैर सरकारी प्रस्ताव आया है, इससे हरियाण में बसा हुआ पंजाबी गौरवाविन्त होगा। पंजाबी के बारे में तो यह कहा जाता है कि दुनिया का कोई भी ऐसा हिस्सा नहीं है जहां आलू और पंजाबी न हो। ऐसी मोबाइल कम्युनिटी, ऐसा मोबाइल कल्चर ऐसे पीस लविंग और हार्ड–वर्किंग लोग जहां भी गए हैं,

वहां अपनी छाप छोड़ आए हैं। हरियाणा में भी मैं यह वि वास से कह सकता है कि आज यहां ीाी इस बात को इस बात को कोई चुनौती नहीं दे पायेगा। आज जाहां भी पंजाबी रहते है वहां उन्होंने अपनी मेहनत से न केवल तालीम पायी है, बल्कि कई क्षेत्रों में काफी उन्नति भी की है हम हरियाणवी है और उस नाते से मैं यह कह सकता हूं कि उन्होनें अपने दे ा को इस मौजूदा लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अपना सब कुछ यानी व्यापार, जायादाद धन दौलत छोड़ा बल्कि कई जगहों पर अपनी इज्जत की कीमत पर इस दे ा का रूप निखारा है। इस नाते से इस सभ्यता का लिट्रेचर औक्र किताबें जो पंजाबी में है, उनका पूरा ज्ञान दिया जाये। इसे हमारे बड़े भाई पंजाबऔर पंजाब में बसरने वाले उन्हीं भाईयों के साथ, जिनसे सन् 66 से हमारा रि ता था और आज भी है, के साथ सौहार्दपूर्ण सहयोग का वातावरण बनाने में काफी मदद मिलेगीं मैं तो यह कहूंगा कि यह काम करके हमने पंजाब प्रांत को चुनौती दी है कि आइए, हमने उस बात को जो हमारी कौमी एकता के लिए जरूरी है, भाई–चारो के लिए जरूरी है, को हम पहल कर के एडोप्ट करते हैं और हम उापसे भी यह कहते हैं कि जब हम आपसे प्यार करते है, हम आपका आदर करते हैं तो आपको भी हमसे उसी भाशा में उसी तरीके से हमें जबाब देना चाहिए। मैं समझता हूं कि यह बहूत बढ़िया और अच्छा प्रस्ताव है जो उनके दिल की बात और उनके अरमानों को पूरा करता हैं मैं तो यहां तक कहूंगा कि कुछ लोगों ने उस वक्त तेलगू भाशा को दूसरी भाशा डिक्लेयर करके इस ीाावना के लोगों का अपमान

किया था। आज उसका रोड्रेसल होगा। उनको कम्पनसेट किया जाएगा। बल्कि मैं यह कहूंगा कि आज उनको लौंग डिनाईड राइट्स दिए जाएंगे। मैं एक बार फिर इस बात को दोहराऊंगा कि आज हम इस स्टेट में पंजाबी भाशा कोदूसरी भाशा के रूप में लागू करके पंजाब को इस बात का अधिकार नहीं देंगे कि वह इस बात को किसी भी तरीके से मिस इंटरप्रेट करे ताकि कल को हमारे दावों को हमारी जायज मांगों को, चण्डीगढ़ और उसके बदले अबोहर फाजिल्का और 107 गाँव तथा इन्दिरा जी का दिया हुआ अवार्ड आदि मामलों में हमें कोट न कर सके। यह बात जो हम स्पश्ट कह रहे हैं, इसका भाशा से कोई ताल्लुक नहीं है, इसका भाशा के प्रचार प्रसार से ताल्लुक है। आने वाली नस्लों को इस लिट्रेचर से बैनीफिट लेने की बात है, इसलिए इससे बढ़िया कोई प्रस्ताव नहीं हो सकता। मैं इसका समर्थन करता हूं और इस प्रस्ताव को रखने वाले सदस्य और मुख्य मंत्री चौधरी भजन लाल जी का अपनी कौम की तरफ से आभार व्यक्त करता हूं कि उन्होनें टाईमली इस प्रस्ताव को विधान सभा में रखा है। मै अपको आ वस्त करता हूं कि यह फायदा, यह सहूलियत मिलने के बाद, बंटवारे के समय जब कभी आएगी तो हम यह वि वास से कह सकते हैं कि हम पहले हरियाणवी है और इस नाते से हरियाणा के हितों की रक्षा में कन्धे से कन्धा मिलाकर यह समस्त कम्यूनिटीच, सरकार को पूरी तरह से सहयोग और आदर देती रहेगी। इन्हीं भाब्दों के साथ मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं कि आपने मुझे बोलने का समय दिया। धन्यावाद।

चौधरी अजमत खां (हयीन): डिप्टी स्पीकर साहब, आज यहां पर पंजाबी को सैकैण्ड लैग्वैंज बनाने के बारे में जो प्रस्ताव आया है, उसके बारे में मैं ज्यादा क्या कहूं। मेरे बहुत से दोस्तों ने, साथियों ने सैकेंड लैग्वेज के बारे में काफी बातें कहीं है। जब पंजाब का बंटवारा हुआ, तब इस जुबान को यहां पर दूसरी जुबान नहीं रहने गया है। हमारे लोग भी पंजाबी बोलते हैं, लेकिन जब भाशा का सवाल आया तो उन्होंने अपनी जुबान हिन्दी लिखवायी। उस नाते से, हमारे हिन्दी भाशी इलाके होने के नाते से हमें हरियाणा मिला। अगर सभी पंजाबी भाशा को मान लेते तो हमें हमारा हक न मिलता, हमारा हक खत्म हो जाता। यह जुबान एक बहुत ही अच्छी जुबान है। यहां तक कि गुरूओं ने अपनी वाणी इसी जुबान में लिखी है। पंजाब का हमे ाा से एक कल्चर और एक तहजीब रही है, जो पंजाबी के साथ जुड़ी हूई पंजाबी जुबान है। यहां तक कि गुरूओं ने अपनी वाणी इसी जुबान में लिखी है। पंजाब का हमे ाा से एक कल्चर और एक तहजीब रही है, जो पंजाबी के साथ जुड़ी हुई है। हम भी पंजाब का एक हिस्सा होने के नाते पंजाबी के रूप में रहे है। हमें पंजाबी जुबान पर नाज है, फख्र हैं लेकिन जब हम भाई अलग–अलग हुए, तब हरियाणा बना। आज पंजताब को सिर्फ एक धर्म के साथ जोड़ देना या एक ही किस्म के आदमियों या माईग्रैंन्ट्स के साथ जोड़ देना या एक ही पार्टी के साथ जोड़ देना गलत बात है। यह कोई अच्छी बात नहीं है। देखने वाली बात यह भी है कि हरियाणा में जो भाशा पढ़ाई जाती है, उस भाशा पढ़ाई जाती है उस भाशा के साथ–साथ

दूसरी भाशा को भी बच्चे पढ़ सकें। बच्चें कितना कुछ ग्रहण कर सकते है। यह भी विचार करने योग्य बात है कि हम कितना कन्ट्रोल इस पर कर सकते है। एक बच्चे पर कितनी जुबानें लादी जा सकती हैं, यह बात भी देखने की है। कोई भी बात अगर आप किसी बच्चें को समझाना चाहों, अगर उसको अपनी जुबन में समझाओं तो वह बता उसी समझ में आती है। इम्तिहान जो लोग देते है, उनको यह पता है कि बच्चे अपनी जुबान मैं ज्यादा जल्दी बातें समझतें है। और ज्यादा अच्छी तरह से एक्सप्रैस भी कर सकते है। इस बारे में रिजल्ट यह बाताते है कि जो आदमी अपनी जुबान में एक्सप्रैस करता है उसके मुकाबले में दूसरी जुबान में एक्सप्रैस करने वाले आदमी के नम्बर कम होते हैं। अपनी जुबान में एक्सप्रैस करने वाले के नम्बर ज्यादा आते है। मेरा कहना यह कतई नहीं हैं कि पंजाबी को सैकन्ड लैंग्वेज बनाने के साथ–साथ यह प्रोविजन भी रखी कि जहां कहीं पर लोग दूसरी कोई जुबान पढ़ना चाहें, उसके लिए भी प्रबन्ध होना चाहिए। हमारे इलाके में लोग उर्दू भाशा ज्यादा पढ़ते हैं मेरा कहना यचह है कि उसको भी जारी रखा जाए। जहां–जहां पर लोग पढ़ते है। मेरा कहना यह है कि उसको भी जारी रखा जाए। जहां–जहां पर लोग पंजाबी पढ़ना चाहें, वहां पर यदि 10 या इससे ज्यादा बच्चे हों तो उनके लिये टीचर का बन्दोबस्त किया जाये और पूरे पैमाने पर इसका प्रबन्ध होना चाहिए। अगर ऐसा हुआ तो यह जुबान सारी जगह पर पढ़ी जायेगी। बच्चों पर किताबों का इतना जयादा बोझ है कि जिसका कोई हिसाब नहीं है। हमारे जमाने में यह 10 वीं जमात में भी

नहीं होगा। आज बच्चों के ऊपर पड़े हुए किताबों के ज्यादा बोझ से हमें उन्हे बचाना होगा। अगर पहली जमात से इसको चालू किया जायेगा तो बच्चों पर बोझ पड़ेगा। इसलिये मेरी अमेंडमैंट इसमें यही है कि जिस जगह के बच्चे इस जुबान को पढ़ना चाहें, वहां के स्कूलों में अगर 10 या इससे ज्यादा बच्चे पढ़ाने वाले हों तो उनको पढ़ाने वाले हों तो उनको पढ़ाने का प्रबन्ध होना चाहिए लेकिन होगा तो वही जो सारे भाई चाहेंगे इसलिए मेरा कहना तो यही है, इस बारें में विचार कर लिया जायें। फैसला तो आप सब के हाथ में है। मै आज भी यही कहता हूं कि उर्दू को भी कम्पलसरी नहीं करना चाहिये, जाहं के लोग पढ़ना चाहें, वहां के लोगों को पढ़ओ। मैं यह नहीं कहता कि इसको कम्पलसरी पढ़ाओ। जाहं पर 10 या 10 से ज्यादा बच्चे हों, वहां के लिए टीचर हमें अव य ही प्रोवाईड करना चाहिए, मेरा आपसे यह अनुरोध है। अगर आप पंजाबी को केवल पंजाब के लोगों को राजी करने के लिए पढ़ाना चाहेंगे तो मैं इस बारे में यह कहना चाइता हूं कि आप ऐसा न करें। हमने पंजाबी से क्या लेना है। पंजाबी वाले कब राजी होंगे, यह तो उनके जहन से ही पता चल सकता है। हमने जितना उन लोगों के जहन को पढ़ा है, उससे हमें यही लगता है कि आप चाहे पंजाबी भी सैकन्ड लैंग्वेज रख लो, इस चंडीगढ़ को भी उनको दे दो, सारा पानी भी उनाके दे दो तो भी उनकी तसल्ली नहीं होगी । वे किस जुबान को बोलतें हैं, किस जुबान को समझते हैं, यह समझने की चीज है। हमारे ऐसा करने से ही वे राजी नहीं होगे।

श्री ए०सी० चौधरी: मैं भी पंजाबी हूं।

चौधरी अजमत खां: मैं आपकी बात नहीं कर रहा हूं। मैं तो सारे पंजाब की बात कर रहा हूं। मैनें पंजाबियों के बारे में बात नहीं की है। आप तो हरियाणवी हैं। मैनें यह कहा है कि पंजाब के लोगों को आप राजी करने के लिए बे ाक पंजाबी भाशा लगा दो, तो भी वे राजी नहीं होंगे। पंजाबी एक ऐसी भाशा है जिस का अपना कल्चर हैं। हम इस कल्चर को मानते हैं। हमने पंजाबी तहजीब को बहुत ही अच्छा पाया है। यह पंजाबी जुबान 15 वीं सदी से चली आ रही हैं। पाकिस्तान में भी इसको बोलते हैं, हिन्दुस्तान में भी इसको बोलते है। हमारे यहां भी बोली जाती है। मैं यह कहना चाहता हूं कि पंजाब वालों को खु ा करने के लिए अगर आप ऐसा कदम लेंगे तो उनके मुतालबात और ज्यादा बढ़ेंगे। मैं एक और बात अर्ज करना चाहता हूं कि अगर आप उनको चंडीगढ़ भी दे दो, पानी भी दे दो और अपने इलाके भी दे दो, तो भी वे लोग इससे राजी नहीं होंगे। जो उनकी जुबान समझते है। केवल पंजाबी को लागू करने से ही वह बात को नहीं मानेंगे। मैं यह उम्मीद करता हूं कि जो बातें मैंने यहां पर कहीं है, उन पर विचार किया जायेगा। इसको आप जबरदस्ती लागू नहीं करेंगे। जिस जुबान को कोई पढ़ना चाहेगा, उसको वही जुबान पढ़ाई जाएगी। उर्दू जहाँ पर लोग पढ़ना चाहेगे, उसको वही जुबान पढ़ाई जाएगी। उर्दू जहां पर लोग पढ़ना चाहेगें, उनको वहां उर्दू ही पढ़ाई जायेगा। भाुक्रिया।

मुख्य मंत्री (चौधरी भजन लाल): उपाध्यक्ष महोदय, आज यह प्रस्ताव सदन के अन्दर विचार के लिये रखा गया हैं। अच्छा होता कि अगर सभी पार्टीज के महानुभाव इस सदन में विराजमान होते। लेकिन बड़े दुख के साथ कहना पड़ता है कि उन मैम्बर्ज का मतलब वाच एण्ड वार्ड के कर्मचारियों से नहीं था कि उन्होनें विधायाकों को रोका, यह हुआ वह हुआ बल्कि उनका असली मकसद यह था कि वह जानबूझ कर इसमें हिस्सा नहीं लेना चाहते थे, वह इसे टालना चाहते थे ताकि यहां कुछ कमिट न कर बैठें और सरकार के खिलाफ लोगों में तरह तरह की भ्रांतियां पैदा कर सकें । इस बात को लेकर वे जानबूझ कर वाबआउट कर गये जबकि स्पीकर साहब ने यह कह दिया था कि नहीं, वे बाकायदा आ सकते है, आप बैठिये। फिर भी वे चले गये क्योंकि यह पता था कि यह प्रस्ताव आने वाला है।

उपाध्यक्ष महोदय, आप भली प्रकार से जानते है कि हरियाणा के अन्दर भाशा लागू करने की बात आई थी, उस समय चौधरी बंसी लाल जी मुख्य मंत्री थे। अच्छा होता यदि वे हाउस में बैठे होते। उन्होनें बजाये पंजाबी लागू करने के, मेरा मतलब पंजाबी–उर्दू से है, हरियाणा के अन्दर तेलगू लागू कर दी। अब आप ही बताओ तेलगू पढ़ने वालों की तादाद यहां हरियाणा के अन्दर कितनी केवल नाममात्र थी। कोई भी तेलगू पढ़ना नहीं चाहता था। आज चौधरी बंसीलाल जी जब बाहर बोलने के लिये जलसे वगैरह में जाते हैं तो वहां पर सिखों के बड़े हमदर्द बनते

हैं, पंजाबियों के के बड़े हमर्दद बनते है और कभी यहां तक भी कहते है कि इन पंजाबियों के साथ बड़ी ज्यादती हुई है और होती रही है। मैं कहता हूं कि जब उनका समय था तो उन्हे पंजाबी लागू करनी चाहिये थी। उन्होनें पंजाबी क्यों नहीं लागू की?

उपाध्यक्ष महोदय, हम तेलगू के खिलाफ नहीं है। हम तो इस दे ा हर प्रदे ा की हर भाशा का मान–सम्मान करते हैं लेकिन मुझे ये बताएं कि हरियाणा के अन्दर तेलगू पढ़ने वाला कौन है? कितने स्टूडैन्ट्स तेलगू पढ़ने के लिये तैयार होते है? कितने लोगों को तेलगू पढ़ने के बाद सर्विस मिल सकती है? लेकिन चौधरी बंसी लाल जी ने पंजाबी भाशा की हरियाणा में न लागू करने के लिये तेलगू लागू कर दी। मैं आज इस सदन के सभी महानुभावों से यह कहना चाहता हूं कि आज हरियाणा के अन्दर पहली भाशा हिन्दी है और दूसरी भाशा इंगलि ा है, लेकिन हमारी भरसक कोि ा ा यह होगी कि हमारे प्रदे ा के अन्दर तेलगू की जगह पंजाबी भाशा और उर्दू भाशा पढ़ाई जानी चाहिये। मैने उपाध्यक्ष महोदय, आते ही यह फैसला किया था कि जहां पंजाबी पढ़ने वाले 10 बच्चे होंगें, वहां हम एक टीचर पंजाबी का देंगे और जहां 10 बच्चे उर्दू पढ़ने वाले होंगे वहां हम एक टीचर उर्दू का देंगे। पंजाबी भाशा लागू करने का मतलब यह नहीं है, जैसा कि कोई महानुभाव यह कहेंगे कि यदि यहां पंजाबी लागू हो गई और पंजाब में भी पंजाबी पढ़ाई जाती है तो कहीं हमारा यह हरियाणा पंजाब में न चला जाए या फिर पंजाबी एरिया उनकी

तरफ न चला जाए। उपाध्यक्ष महोदय, जो प्रदे ा भाशा के आधार पर बने हैं वे बड़े ही घातक सिद्व हो सकते हैं और हुए भी है। मै। कभी भी इस हम में नहीं था कि भाशा के आधार पर प्रदे ा बनाए जाएं और न ही अब इस बात के हक में हूं। भाशा के आधार पर प्रदे ा बनाए जाएं और न ही अब इस बात के हक में हूं। भाशा के आधार पर प्रदे ा बनाए जाएं और न ही अब इस बात के हम में हूं। भाशा के आधार पर होने चाहिए, संस्कृति के आधार पर होने चाहिए। आज जिन–जिन प्रदे ाों का बंटवारा हुआ, वहां के लोग यह महसूस करते है कि हम से भूल हुई है। इसलिये मैं श्री फूलचंद मुलाना जो से प्रार्थना करूंगा कि वे इस प्रस्ताव को वापिस ले लें। हमें इस मामलें में पूरी हमदर्दी है और सरकार इस मामले पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करेगी, और हमारी पूरी कोि ा ा होगी कि हम इस मामले पर सभी अपोजी ान पार्टीज के माननीय सदस्यों को भी वि वास में लें। उनको वि वास में लेने के बाद हम इस का फैसला करेंगे। धन्यावाद।

चौधरी फूलचन्द मुलाना (मुलाना–अनुसूचित जाति): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सारे सदन के विचार आपके सामने आए है। पंजाबी और पंजाबी भाशा के प्रति जो सम्मान माननीय सदस्यों और सदन के नेता चौधरी भजन लाल जी ने व्यक्त किए हैं, मैं उनसे पूर्ण आ वस्त हूं। इन विचारों के तहत पंजाबी भाशा की हरियाणा में जहां कहीं भी मांग होगी, उसको पढ़ाने के लिए उचित प्रबन्ध किया जाएगा। मैं इस बात का ध्यान रखते हुए कि

सदन की भावना सरकार तक पहूंच गई, इस रेजोल्यू ान को वापिस लेता हूं।

इलैक्ट्रोनिक्स राज्य मंत्री (डा० राम प्रका ा): उपाध्यक्ष महोदय, हम चाहते है कि संस्कृत भाशा को भी हरियाणा में पढ़ाया जाए।

चौधरी भजन लाल: संस्कृत भाशा भी हरियाणा में पढ़ाई जा रही है।

चौधरी फूल चन्द मुलाना: उपाध्यक्ष महोदय, डा० राम प्रका ा जी ने कहा कि संस्कृत भाशा भी पढ़ाई जाए। हमारे स्कूलों में जहां जहां बच्चे संस्कृत पढ़ते हैं उनके लिए उचित प्रबन्ध किया गया है। आज करीब साढ़े पांच लाख बच्चे संस्कृत पढ़ते है। तो उपाध्यक्ष महोदय, मुख्य मंत्री महोदय के विचारो को ध्यान में रखते हुए मैं इस प्रस्ताव को वापिस लेता हूं।

Mr. Deputy Speaker: Has the Hon'ble Member, the leave of the House to withdraw the resoultion?

Voice: Yes, yes.

The resolution was, by leave of the House, withdrawn.

Mr. Deputy Speaker: The House stands adjourned till 9.30 a.m. tomorrow.

12.06 Hrs.

(The Sabha then adjourned till 9.30 a.m. on Friday the 13th March, 1992.)